ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 13 जनवरी 2019

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 13 जनवरी 2019 से 19 जनवरी 2019

पौष शु. – 07 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 61, अंक 02, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. बी.आर.एस. नगर, लुधियाना में हुआ मंत्रोच्चारण से नववर्ष का आगाज़

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।' सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय के साक्षी बनें और किसी को भी दुख का भागी न बनना पड़े। इन्हीं मंगल कामनाओं को मन में धारण करते हुए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बी.आर.एस. नगर, लुधियाना में नववर्ष पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कक्षाओं के लगभग 700 बच्चों व कक्षा अध्यापकों ने भाग लिया। यज्ञ का आरम्भ वैदिक ऋचाओं से किया गया।

सर्वशक्तिमान परमात्मा से सर्वमंगल की कामना की गई। यह नववर्ष संस्थान से जुड़े सभी सदस्यों, छात्रों व अध्यापकों के जीवन में नया जोश, उमंग–तरंग का संचार करे, यही शुभेच्छा पावन यज्ञ की अग्नि में डाली गई प्रत्येक आहुति से की जा रही थी। अंत में प्रार्थना के उपरांत प्राचार्या जे. के. सिद्धू ने अपने आशीर्वचनों में सबके अच्छे स्वास्थ्य की कामना व्यक्त की और उपस्थित छात्रों को वैदिक विचारधारा से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं का अनुशीलन करने का आह्वान भी किया।

डी.ए.वी. नाभा ने लगाया रक्तदान शिविर

डी.ए.वी. सैंटनरी पब्लिक सीनीयर सैकंडरी स्कूल नाभा के प्रागंण में आर्य युवा समाज, पंजाब के तत्त्वावधान में एवम् डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली के चेयरमैन श्री एच.आर. गंधार जी व विद्यालय के क्षेत्रीय निर्देशक विजय कुमार के मार्ग दर्शन में विद्यालय की कक्षा बारहवीं के दिवंगत छात्र मास्टर जगदीप सिंह की पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य पर विद्यालय में रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम प्रधानाचार्या मीना मेहता ने मुख्यातिथि श्री एच.आर. गंधार, विशेष अतिथि के श्री विजय कुमार शर्मा एवम् मैनेजर श्री रमेश लाल एवं डी.ए.वी. स्कूलों के प्रधानाचार्यों का हार्दिक अभिनन्दन किया।

इस रक्तदान शिविर का संचालन राजेन्द्रा अस्पताल, पटियाला से आई ब्लड बैंक के सदस्यों डॉ. रमनीक कौर, डॉ. जसप्रीत कौर, डॉ. सतपाल सिंह, एवम् डॉ. दारा सिंह की टीम द्वारा किया गया। सर्वप्रथम विद्यालय के शिक्षकों, छात्रों के अभिभावकों, अग्रसेन सभा के सदस्यों, नाभा नगर के गणमान्य व्यक्तियों ने स्वेच्छा से रक्तदान करते हुए रक्तदान शिविर में अपना सहयोग दिया।

श्री एच.आर. गंधार ने कहा कि इस रक्तदान शिविर का मुख्योद्देश्य अस्वस्थ लोगों को नया जीवन प्रदान करना है। सभी अतिथिगणों ने मास्टर जगदीप सिंह को श्रद्धांजली अर्पित की।

इस रक्तदान शिविर में लगभग 300 यूनिट रक्तदान करते हुए शिविर को सफल बनाया गया। शिविर में रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देते हुए सम्मानित किया गया।

इसके साथ ही विद्यालय में छात्रों की सुविधा के लिए एक ढलवां मार्ग रैम्प का उद्घाटन आदरणीय हंसराज गंधार, क्षेत्रीय निर्देशक विजय कुमार व अन्य विद्यालय के प्राचार्यों के द्वारा किया गया।

डी.ए.वी. थर्मल कॉलोनी, पानीपत में सप्तदिवसीय शिविर सम्पन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल थर्मल कॉलोनी पानीपत में सप्तदिवसीय एन.एस.एस. शिविर का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा किया गया। प्राचार्या श्रीमती रितु दिलबागी ने कहा कि स्वच्छता से अभिप्राय केवल अपने आस पास का वातावरण ही स्वच्छ नहीं करना है अपितु अपने अंतःकरण को भी शुद्ध करना है। हमारे मन में अनेक विकार विद्यमान हैं जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, आलस्य। जब तक आंतरिक शुद्धि नहीं होगी तब तक बाह्य स्वच्छता अधूरी है। मन के इन विकारों को दूर करने के लिए प्रातः

ब्रह्म मुहुर्त में उठकर परमात्मा के नाम का जप ध्यान आदि करना चाहिए। योगाभ्यास करना चाहिए। आंतरिक स्वच्छता को ध्यान में रखकर ही स्वयंसेवकों को सूक्ष्म विधि बताते हुए कार्यक्रमाधिकारी श्री शीशपाल ने योगाभ्यास करवाया। श्री राजीव ने बच्चों को हवन करवाया व हवन के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए कहा कि यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

श्रीमती डॉ. नीलम सैनी ने बताया कि स्वस्थ रहने के लिए ये आवश्यक है कि हम अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान दें। इसके पश्चात विद्यालय के एन.एस.एस. दल ने विद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान भी चलाया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 13 जनवरी 2019 से 19 जनवरी 2019

मनोबल, सत्य, यश, श्री

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीय।
पशूनां रूपमन्नस्य रसो, यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजु ३९.४

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(मनसः)** मन की **(कामं)** इच्छा–शक्ति को [तथा] **(आकूतिं)** संकल्प–शक्ति को [और] **(वाचः)** वाणी के **(सत्यं)** सत्य को **(अशीय)** प्राप्त करूं। **(पशूनां)** पशुओं का **(रूपं)** रूप, **(अन्नस्य)** अन्न का **(रसः)** रस, **(यशः)** कीर्ति [और] **(श्रीः)** श्री **(मयि)** मुझमें **(श्रयतां)** स्थित हो। **(स्वाहा)** एतदर्थ आहुति देता हूं, सत्क्रिया करता हूं।

मैं चाहता हूं कि मैं एक उत्कृष्ट मानव बनूं, मेरे अन्दर विविध शक्तियाँ अपने पूर्णरूप में निवास करें। मेरे मन के अन्दर प्रबल इच्छा शक्ति (काम) और संकल्प शक्ति (आकूति) हो। मानव इच्छाएं करता रहता है, परन्तु वे पूर्ण नहीं होतीं, यह इच्छा शक्ति की दुर्बलता का चिन्ह है। योगी जन बताते हैं कि इच्छा शक्ति को बलवान् बना लेने पर मनुष्य जो इच्छा करता है वह पूर्ण होकर रहती है। वह इच्छा करता है कि अमुक पापी धर्मात्मा बन जाए, या अमुक रोगी का रोग दूर हो जाए, तो सचमुच वैसा ही हो जाता है। मन की दूसरी शक्ति संकल्प शक्ति है। संकल्प की दृढ़ता होने पर मनुष्य अपने व्रत से च्युत नहीं होता। जो व्रत एक बार धारण कर लेता है, अन्त तक उसका निर्वाह करता है। यदि वह संकल्प करता है कि मैं आज से ब्रह्मचारी रहूंगा, तो उस पर दृढ़ रहता है। यदि वह संकल्प करता है कि मैं आज से धूम्रपान करना छोड़ता हूं, तो सचमुच उसका यह व्यसन छूट जाता है। इसके विपरीत जिनमें संकल्प शक्ति की दृढ़ता नहीं होती, वे नित्य नवीन–नवीन संकल्प करते हैं, और किसी न किसी बहाने उन्हें तोड़ते रहते हैं।

मेरी यह भी कामना है कि मेरी वाणी में सत्य हो। वाणी में सत्य तभी आ सकता है, यदि मन में भी सत्य हो। यदि मन में सत्य होगा, तो वह कर्म में भी आयेगा। इस प्रकार मनसा, वाचा, कर्मणा मैं सत्यमय हो जाऊं, यह मेरी आन्तरिक अभिलाषा है। पतंजलि मुनि ने कहा है कि जिसके अन्दर सत्य प्रतिष्ठित हो जाता है, उसे क्रिया–फलाश्रयत्व प्राप्त हो जाता है, उसकी वाणी अमोघ हो जाती है। उसकी वाणी से दिये गये आशीर्वाद सत्य सिद्ध होते हैं। मेरी वाणी में भी यह दिव्य शक्ति आये।

मेरी यह भी अभिलाषा है कि मुझे गाय आदि दुधारू पशुओं का दूध यथेच्छ मात्रा में मिले, जिससे उसके सेवन से प्राप्त होनेवाला सौन्दर्य मुझमें आये। मुझे सात्विक अन्नों से मिलनेवाला रस–रक्त भी प्राप्त हो। मुझे धर्म और सत्कर्म से प्राप्त होनेवाली कीर्ति भी मिले और मेरी श्री, मेरी शोभा, दिग्दिगन्त में फैले। उक्त सब कामनाओं और आदर्शों की पूर्ति के लिए 'स्वाहा' हो, सत्क्रियाओं और सत्यप्रयासों की निरन्तर आहुति पड़ती रहे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में स्वामी जी ने बताया आत्मा के अतिरिक्त एक प्रकृति भी है, जो आत्मा की शक्ति से विकृति बनती है। माया ईश्वर की शक्ति है। सृष्टि के आरम्भ में प्रकट होती है। परन्तु प्रकट हो या न हो, वह सदा रहती है, उसी को अविद्या कहते हैं, उसी में सत्, रजस् और तमस् तीन गुण हैं, उसी से सारा जगत् उत्पन्न होता है।

ब्रह्म को तीन भागों में विभक्त कर दिया। पहला भाग शुद्ध ब्रह्म, दूसरा भाग अन्तःकरण विशिष्ट ब्रह्म अर्थात् जीव, तीसरा भाग माया है। माया ब्रह्म की शक्ति है। वास्तविकता यह है कि ब्रह्म अलग है, प्रकृति अथवा माया अलग और जीवात्मा दोनों से भिन्न।

ब्रह्म यदि बड़ा है तो स्पष्ट है कोई उससे छोटा भी होना चाहिए। सदा से तीन वस्तुएँ वर्तमान हैं, एक प्रकृति जो जड़ है, दूसरा आत्मा जो छोटा है, तीसरा परमात्मा जो सबसे बड़ा है, इसलिए ब्रह्म है।

अब आगे ...

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में महर्षि दयानन्द ने भी यही बात लिखी है। उसको सुनने से पूर्व यह सुनिये कि परमात्मा के दर्शन किस स्थान पर होते हैं। महर्षि कहते हैं, हृदय के भीतर कमल–जैसी जो वस्तु है उसमें आत्मा और परमात्मा दोनों रहते हैं। वेद में इसी बात का एक और रीति से वर्णन किया गया है। वेद के एक मन्त्र का अर्थ है–

"आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली अयोध्या नाम की देवताओं की नगरी है। उसमें एक गुफा के अन्दर सोने के कोश में छुपा हुआ वह परम् ज्योतिमान् ब्रह्म रहता है।"

आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली नगरी है मनुष्य का यह शरीर। सबसे नीचे है मूलाधार चक्र, इसके पश्चात् स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपूरक चक्र, अनाहत चक्र, मनस् चक्र, विशुद्धि चक्र, आज्ञा चक्र, सहस्रार चक्र। इसी प्रकार नौ द्वार हैं – नाक के दो छिद्र, दो कान, दो आँखें, मुख और नीचे के दो द्वार। इन सभी द्वारों पर देवता पहरा देते हैं। इनसे आगे शरीर के अन्धकार में हृदय की गुफा है, उसके भीतर प्रकृति के सुनहरी ढक्कन से घिरा हुआ परम ज्योतिस्वरूप परमात्मा रहता है।

इसके भीतर वह प्रवेश करता है, जो अष्टांग योग के सभी अंगों का अनुष्ठान और चार प्रकार के साधनों का आचरण करता है।

जब महर्षि समाधि का वर्णन करते हैं तो लिखते हैं कि जैसे अग्नि के बीच में लोहा भी अग्निरूप हो जाता है, इसी प्रकार परमेश्वर के ज्ञान में प्रकाशमय होके, अपने शरीर को भूले हुए के समान जान के, आत्मा को परमात्मा के प्रकाशस्वरूप आनन्द और ज्ञान से परिपूर्ण को समाधि कहते है...वहाँ तीनों (ईश्वर, जीव, प्रकृति) का भेदभाव नहीं रहता।

स्मरण रखिये, महा हो जाने का अर्थ परमात्मा बन जाना नहीं है। लोहे का गोला अग्नि के समान हो जाता है अवश्य, आग नहीं बन जाता। उसे आग से निकालकर पानी में डाल दीजिये, वह फिर लोहे का लोहा बन जाता है। इसी प्रकार आत्मा परमात्मा नहीं बनता, परमात्मा के जैसा हो जाता है। 'मैं ब्रह्म हूँ' ऐसा कहने का अधिकार केवल समाधि की दशा में प्राप्त होता है, उससे पूर्व नहीं। एम.ए. की डिग्री प्राप्त किये बिना जैसे कोई व्यक्ति अपने–आपको एम.ए. नहीं कह सकता, कहे तो अपराधी बनता है, उसी प्रकार इस दशा को प्राप्त किये बिना जो लोग अपने को 'मैं ब्रह्म हूँ' कहते हैं, वे ईश्वर के अपराधी बनते हैं।

यह है जगद्‌गुरु शंकराचार्य के अद्वैतवाद और महर्षि दयानन्द के त्रैतवाद का वास्तविक फोटो। जगद्‌गुरु मानते वही हैं जो महर्षि मानते हैं, और महर्षि वही बात कहते हैं जो जगद्‌गुरु कहते हैं, केवल उनके कहने का ढंग भिन्न–भिन्न है। अपने ढंग को निभाने के लिए जगद्‌गुरु शंकराचार्य ने गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषद् तीनों को आधार माना। महर्षि ने इन तीनों को देखा, इनके साथ वेद को भी। जगद्‌गुरु केवल नास्तिकता के विरुद्ध लड़ना चाहते थे, जो उस समय फैल रही थी। महर्षि नास्तिकता के अतिरिक्त उस विदेशी संस्कृति के आक्रमण का उत्तर देना चाहते थे जो देश के स्वाभिमान को दबाये देती थी। इसलिए दोनों ने अलग–अलग मार्ग अपनाये, अन्यथा उनमें बहुत अन्तर नहीं। महर्षि ने वेद को संसार के समक्ष रखा, जगद्‌गुरु ने केवल वेदान्त को, वेद के अन्तिम भाग उपनिषदों को।

वेद का यह अन्तिम भाग अथवा वेदान्त वेद से भिन्न नहीं, इससे उलटा

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

नैतिक मूल्यों की शिक्षा : हमारी परम्परा

● अपर्णा ऐरी

नैतिकता हमें किसी कार्य को करने की या न करने की आज्ञा देती है वह हमें अच्छाई तथा बुराई का बोध करवाती हैं। बड़ों का सम्मान करना, चोरी न करना, किसी प्राणी को दुःख न पहुँचाना, समाज व देश के कल्याण के लिए कार्य करना आदि। नैतिक मूल्यों को समझकर लोग अच्छे रास्ते पर चलते हैं, ईमानदार बनते हैं, बड़ों की इज्जत करते हैं, सच बोलते हैं।

प्राचीन काल से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर बल दिया जाता रहा है इसीलिए भारत में गुरुकुल की परंपरा प्रचलित थी। अक्सर देखा गया है कि घरों का वातावरण गुरुकुल की भाँति संस्कारित नहीं होता। गुरुकुल में संस्कारी वातावरण में उत्तम आहार–विहार तथा आचार के साथ व्यवसायिक शिक्षा दी जाती रही है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली समय के साथ विकसित हुई है परंतु नैतिक मूल्यों की शिक्षा के महत्त्व को कभी भी नकारा नहीं गया। यही कारण है कि विद्यालय में प्रत्येक स्तर पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। डी.ए.वी. में प्राथमिक कक्षाओं से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। अतः संस्कार रूपी बीज को फलने – फूलने के लिए सही माहौल तथा शिक्षा रूपी दिशा प्रदान करने का कार्य हमारी संस्था ने सदा ही किया है।'

डी.ए.वी. संस्था का मूल मंत्र है – **असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय** अर्थात हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। असत्य और अंधकार का संबंध मनुष्य के अनैतिक मार्ग से है। आज भ्रष्टाचार समाज पर भारी है, इस अनैतिकता के अंधकार को नैतिकता के प्रकाश से जगमगाने हेतु हमारी डी.ए.वी. संस्था नित प्रति पूरे मन तथा लगन से अथक प्रयास कर रही है।

डी.ए.वी. संस्था आधुनिक और वैज्ञानिक शिक्षा के साथ–साथ वैदिक शिक्षा को महत्त्व देती है, अपनी संस्कृति को संजोकर (संभालकर) रखने की बात करती है। शिक्षित तथा संस्कारी नागरिक तैयार करना हम सभी का दायित्व है। सत्य तो यह है कि **धन जाता है तो कुछ जाता है स्वास्थ्य जाता है तो बहुत कुछ जाता है परंतु चरित्र जाने पर सब कुछ चला जाता** है इसीलिए चरित्र को सर्वोपरि कहा गया है।

पहले बच्चे संयुक्त परिवार में रहते थे। दादा–दादी, नाना–नानी अपनी मूल्यपरक कहानियों के माध्यम से उनका मनोरंजन करते थे। यह संस्कार अनायास ही उनके मन–मस्तिष्क में घर कर जाते थे परंतु आधुनिक युग में मीडिया तथा सोशल साइट्स ने रिश्तों में सेंध लगा दी है। आज बच्चे बड़ों के साथ बैठकर उनसे बातें करने के बजाय फेसबुक, व्हाट्सएप जैसी सोशल साइट्स में ही व्यस्त रहते हैं।

टी.वी. का जीवन सही नहीं होता और जीवन टी.वी. के सीरियल नहीं होते। कभी जीवन में आराम नहीं होता। सिर्फ काम और सिर्फ काम होता है। क्या आपने कभी यह विचार किया कि लग्जरी क्लास कार (जगुआर, हम्मर, बीएमडब्ल्यू, ऑडी फेरारी) का किसी टी.वी. चैनल पर कभी कोई विज्ञापन क्यों नहीं दिखाया जाता? कारण यह है कि उन कार कंपनी वालों को यह पता है कि ऐसी कार लेने वाले व्यक्ति के पास टी.वी. के सामने बैठने का फालतू समय नहीं होता। लगातार पढ़ाई करने वाले और कड़ी मेहनत करने वाले अपने मित्रों को कभी मत चिढ़ाओ। एक समय ऐसा आएगा कि तुम्हें उनके नीचे काम करना पड़ेगा। तुम्हारी गलती तथा पराजय के लिए किसी अन्य को दोष मत दो। गलती से सीखो और आगे बढ़ो। बिना परिश्रम के सफलता हासिल करने का स्वप्न मत देखो।

वो कहा जाता है न कि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। महान वैज्ञानिक तथा भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बचपन से पायलट बनना चाहते थे और जिसके लिए उन्होंने देहरादून एयरफोर्स अकादमी में फॉर्म भी भर दिया लेकिन परीक्षा में कम अंक आने से उनका चयन नहीं हुआ तो इस पर भी अब्दुल कलाम हारे नहीं और खुद को जीवन में आगे बढ़ाते हुए विज्ञान की दिशा में बढ़ गये और फिर पूरी दुनिया में एक वैज्ञानिक के रूप में मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध हुए। अब्दुल कलाम के जीवन की इस घटना से पता चलता है कि क्या हुआ जब हम एक जगह फेल हो गए तो हमे उसकी चिंता छोड़कर दूसरी जगह लग जाना चाहिए कहीं तो सफलता मिलेगी ही, इसलिए हमें अपने जीवन में कभी भी हार नही मानना चाहिए

यही नहीं मानवता के प्रति प्रेम उनमें कूट–कूट कर भरा हुआ था। एक बार डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (डी.आर.डी.ओ.) में उनकी टीम बिल्डिंग की सुरक्षा को लेकर चर्चा कर रही थी। टीम ने सुझाव दिया कि बिल्डिंग की दीवार पर काँच के टुकड़े लगा देने चाहिए। लेकिन डॉ. कलाम ने टीम के इस सुझाव को ठुकरा दिया और कहा कि अगर हम ऐसा करेंगे तो इस दीवार पर पक्षी नहीं बैठेंगे।

डॉक्टर कलाम जब भारत के राष्ट्रपति बने तो उन्हें ज्ञात हुआ कि भारत के राष्ट्रपति का पूरा खर्च तो भारत सरकार उठाती है, ऐसे में उन्होंने डॉक्टर वर्गीज कुरियन को बुलाया और कहा कि अब मैं भारत का राष्ट्रपति बन गया हूँ और सरकार मेरे खर्चे को अब वहन करेगी तो अब मैं अपनी बचत व तनख्वाह का क्या करूँगा, इसके बाद डॉक्टर कलाम ने अपने जीवन की सारी जमा पूँजी चैरिटी में दान कर दी। महात्मा हंसराज जी ने भी बिना किसी वेतन के डी.ए.वी. संस्थान की जीवन पर्यंत सेवा की।

युवा शक्ति देश और समाज की रीढ़ होती है। युवा देश और समाज को नए शिखर पर ले जाते हैं। युवा देश के वर्तमान हैं, तो भूतकाल और भविष्य के सेतु (बाँध) भी हैं। युवा देश और समाज के जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। युवा गहन ऊर्जा और उच्च महत्त्वकांक्षाओं से भरे हुए होते हैं। उनकी आँखों में भविष्य के इंद्रधनुषी स्वप्न होते हैं। समाज को बेहतर बनाने और राष्ट्र के निर्माण में सर्वाधिक योगदान युवाओं का ही होता है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं ने अपनी शक्ति का परिचय दिया था। परंतु देखने में आ रहा है कि युवाओं में नकारात्मकता जन्म ले रही है। उनमें धैर्य की कमी है। वे हर वस्तु अति शीघ्र प्राप्त कर लेना चाहते हैं। वे आगे बढ़ने के लिए कठिन परिश्रम की बजाय शॉटकट्स खोजते हैं। भोग–विलास और आधुनिकता की चकाचौंध उन्हें प्रभावित करती है। उच्च पद, धन–दौलत और ऐश्वर्य का जीवन उनका आदर्श बन गए हैं। अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में जब वे असफल हो जाते हैं, तो उनमें चिड़चिड़ापन आ जाता है। कई बार वे मानसिक तनाव का भी शिकार हो जाते हैं। युवाओं की इस नकारात्मकता को सकारात्मकता में परिवर्तित करना होगा। उन्हें स्वामी विवेकानंद से प्रेरणा लेनी होगी।

केवल लक्ष्य पर ध्यान लगाओ

एक बार स्वामी विवेकानंद अमेरिका में भ्रमण कर रहे थे। अचानक, एक जगह से गुजरते हुए उन्होंने पुल पर खड़े कुछ लड़कों को नदी में तैर रहे अंडे के छिलकों पर बन्दूक से निशाना लगाते देखा। किसी भी लड़के का एक भी निशाना सही नहीं लग रहा था। तब उन्होंने एक लड़के से बन्दूक ली और खुद निशाना लगाने लगे। उन्होंने पहला निशाना लगाया और वो बिलकुल सही लगा, फिर एक के बाद एक उन्होंने कुल 12 निशाने लगाए। सभी बिलकुल सटीक लगे।

ये देख लड़के दंग रह गए और उनसे पूछा – स्वामी जी, भला आप ये कैसे कर लेते हैं? आपने सारे निशाने बिलकुल सटीक कैसे लगा लिए? स्वामी विवेकनन्द जी बोले असंभव कुछ नहीं है, तुम जो भी कर रहे हो अपना पूरा दिमाग उसी एक काम में लगाओ। अगर तुम निशाना लगा रहे हो तो तम्हारा पूरा ध्यान सिर्फ अपने लक्ष्य पर होना चाहिए। तब तुम कभी चूकोगे नहीं। यदि तुम अपना पाठ पढ़ रहे हो तो सिर्फ पाठ के बारे में सोचो।

सत्य का साथ कभी न छोड़े

स्वामी विवेकानंद प्रारंभ से ही एक मेधावी छात्र थे और सभी लोग उनके व्यक्तित्व और वाणी से प्रभावित रहते थे। जब वे अपने साथी छात्रों से कुछ बताते तो सब मंत्रमुग्ध हो कर उन्हें सुनते थे। एक दिन कक्षा में वे कुछ मित्रों को कहानी सुना रहे थे, सभी उनकी बातें सुनने में इतने मग्न थे की उन्हें पता ही नहीं चला कि कब मास्टर जी कक्षा में आए और पढ़ाना शुरू कर दिया। मास्टर जी ने अभी पढ़ना शुरू ही किया था कि उन्हें कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी। कौन बात कर रहा है? मास्टर जी ने तेज आवाज़ में पूछा। सभी छात्रों ने स्वामी जी और उनके साथ बैठे छात्रों की तरफ इशारा कर दिया। मास्टर जी क्रोधित हो गए।

उन्होंने तुरंत उन छात्रों को बुलाया और पाठ से संबधित प्रश्न पूछने लगे। जब कोई भी उत्तर नहीं दे पाया। तब अंत में मास्टर जी ने स्वामी जी से भी वही प्रश्न किया, स्वामी जी तो मानो सब कुछ पहले से ही जानते हों, उन्होंने आसानी से उस प्रश्न का उत्तर दे दिया। यह देख मास्टर जी को यकीन हो गया कि स्वामी जी पाठ पर ध्यान दे रहे थे और बाकी छात्र बात–चीत में लगे हुए थे। फिर क्या था। उन्होंने स्वामी जी को छोड़ सभी को बेंच पर खड़े होने की सजा दे दी। सभी छात्र एक–एक कर बेंच पर खड़े होने लगे, स्वामी जी ने भी यही **किया। मास्टर जी बोले – नरेन्द्र तुम बैठ जाओ! नहीं सर, मुझे भी खड़ा होना होगा क्योंकि वो मैं ही था जो इन छात्रों से बात कर रहा था।** स्वामी जी ने आग्रह किया। सभी उनकी सच बोलने की हिम्मत देख बहुत प्रभावित हुए।

अंग्रेजी में एक कहावत है– **Success is the Best Revenge – मतलब सफलता सबसे अच्छा बदला है!** इस कहावत के मायने वही इंसान जान सकता है जो सफलता के हर मापदंड पर खरा उतरने की काबलियत रखता हो और जिसने हर मुश्किल परिस्थिति को अपनी ताकत बनाकर इस्तेमाल किया हो! भारत

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

ओषधियों की उपयोगिता–यजुर्वेद

● शिव नारायण उपाध्याय

यजुर्वेद मुख्यरूप से कर्मकाण्ड का वेद है परन्तु फिर भी इसमें अनेक विषयों पर गम्भीर चिन्तन भी हुआ है। आयुर्वेद पर भी इसमें चिन्तन किया है और मुख्यरूप से ओषधियों की उपयोगिता पर विशेष रूप से विचार किया गया है।

यजुर्वेद अध्याय 12 में दो तीन मंत्रों को छोड़कर मंत्र संख्या 75 से मंत्र संख्या 102 तक के मंत्रों में ओषध विज्ञान पर ही चर्चा की गई है।

या ओषधीः पूर्वि जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।

यजु. 12.75

पदार्थ– (**अहम्**) मैं (**याः**) जो (**ओषधीः**) सोमलता आदि ओषधी (**देवेभ्यः**) पृथ्वी आदि से (**त्रियुगम्**) तीन वर्ष (**पुरा**) पहले (**पूर्वाः**) पूर्ण सुखदान में उत्तम (**जाताः**) प्रसिद्ध हुई जो (**बभ्रूणाम्**) धारण करने वाले रोगियों के (**शतम्**) सौ (**च**) और (**सप्त**) सात (**धामानि**) जन्म वा नाड़ियों के गर्भों में व्याप्त होती हैं उनको (**नु**) शीघ्र (**मनै**) जान।

भावार्थ– मनुष्यों को योग्य है कि जो पृथ्वी एवं जल में ओषधि उत्पन्न होती है उन्हें तीन वर्ष के बाद ठीक–ठीक पकी हुई को ग्रहण करें और वैद्यक शास्त्र के अनुकूल विधान से सेवन करें। सेवन की हुई ओषधि शरीर के सब अंगों से रोगों को छुड़ा कर शीघ्र स्वस्थ कर देती है।

ओषधि के साथ रोगी को पथ्य का भी ध्यान रखना चाहिए।

शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रूहः।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत।

यजु. 12.76

पदार्थ– हे (**शतक्रत्वः**) सैंकड़ों प्रकार की बुद्धि वा क्रियाओं से युक्त मनुष्यो। (**यूयम्**) तुम लोग जिन से (**शतम्**) सैंकड़ों (**उत**) वा (**सहस्त्रम्**) हजारों (**रूहः**) नाड़ियों के अंकुर हैं उन ओषधियों से (**मे**) मेरे (**इमम्**) इस शरीर को (**अगदम्**) नीरोग (**कृत**) करो। (***अथ***) इसके पश्चात् (**वः**) तुम्हारे असंख्य (**धामानि**)। मर्म स्थान हैं उनको प्राप्त होओ। हे (**अम्बा**) माता। तू ऐसा आचरण कर।

भावार्थ– मनुष्यों का सबसे पहले ओषधियों का सेवन, पथ्य का आचरण और नियम पूर्वक व्यवहार करके शरीर को रोगरहित करना चाहिए।

हम किस प्रकार की ओषधि ग्रहण करें, इस पर कहा जाता है–

ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरूधः परियिष्णवः।

यजु. 12.77

हे मनुष्यो! तुमको लोग (**अश्वा इव**) घोड़ों के समान (**सजित्वरीः**) शरीरों के साथ संयुक्त रोगों को जीतने वाले (**वीरूधः**) सोमलता आदि (**पारयिष्णवः**) दुःखों से पार कराने योग्य (**पुष्पवतीः**) प्रशंसित पुष्पों से युक्त (**पुसूवरीः**) सुख देने वाली (**ओषधिः**) ओषधियों को प्राप्त करके (**प्रतिमोदध्वं**) नित्य आनन्द भोगो।

ओषध सदैव योग्य अनुभवी वैद्य से ही लेना चाहिए।

यत्रोषधीः समग्मत राजानः समिताविव।
विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचातनः।

यजुः12.80

हे मनुष्यों! तुम लोग जिन स्थानों से सोमलता आदि ओषधियाँ होती हों उनको जैसे वीर पुरुष युद्ध में शत्रुओं को प्राप्त होते हैं वैसे प्राप्त करो। जो दुष्ट रोगों का नाशक रोगों को निवृत्त करने वाला बुद्धिमान वैद्य हो वही तुम्हारे प्रति ओषधियों के गुणों का उपयोग करे। तुम वैद्य की सलाह के अनुसार ओषधियों का सेवन करो। ओषधियों के सेवन से मनुष्य को नित्य अपना पुरुषार्थ बढ़ाते रहना चाहिए इस विषय में कहा गया है–

अश्वावतीं सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम्।
आऽवित्सि सर्वा ओषधीरस्मा अरिष्टतातये।

यजु. 12.81

जैसे में (**अरिष्टतातये**) दुःख दायक रोगों से छुड़ाने के लिए (**अश्वावतीम्**) प्रशंसित शुभ गुणों से युक्त (**सोमवतीम्**) बहुत रसीली (**उदोजसम्**) पराक्रम बढ़ाने वाली (**ऊर्जन्तीम्**) बल प्रदाता श्रेष्ठ ओषधियों को (**आ**) सब प्रकार (**आवित्सि**) जानू कि जिससे (**सर्वाः**) सब (**ओषधीः**) ओषधि (**अस्मै**) इस मेरे लिए सुख दे। ओषधियाँ हमारी सेवा माता–पिता के समान करती हैं अतः हमें भी उन्हें व्यर्थ नष्ट नहीं होने देना है। हमें वे काम छोड़ देना चाहिए जिनके कारण हम अस्वस्थ हो जाते हैं।

इष्कृतिर्नाम वो माताऽथो यूयं स्थ निष्कृतीः।
सीराः पतात्रिणी स्थन यदामयति निष्कृथ।

यजु. 12.83

पदार्थ– हे मनुष्यो! (**यूयम्**) तुम लोग जो (**वः**) तुम्हारी (**इष्कृतिः**) कार्य सिद्धि करने वाली (**माता**) माता के समान ओषधि (**नाम**) प्रसिद्ध है उसकी सेवा के तुल्य सेवन की हुई ओषधियों को जानने वाले (**स्थ**) होओ। (**पतत्रिणीः**) चलने वाले (**सीराः**) नदियों के समान (**निष्कृतिः**) प्रत्युपकारों को सिद्ध करने वाले (**स्थन**) होओ। (**अथो**) इसके अनन्तर (**यत्**) जो क्रिया अथवा ओषधि अथवा वैद्य (**आमयति**) रोग बढ़ाये उसको (**निष्कृथ**) छोड़ दो।

ठीक ठीक सेवन की गई ओषधियाँ रोगों को अवश्य नष्ट करती हैं।

यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्गं परूष्परूः।
ततो यक्ष्मं वि बाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव।

यजु. 12.86.

पदार्थ– हे मनुष्यो! तुल लोग (**यस्य**) जिसके (**अंगमंगम्**) सब अवयवों और (**परूष्परूः**) मर्म, मर्म के प्रति वर्तमान है उसके उस (**उग्रः**) तीव्र (**यक्ष्मम्**) क्षयी रोग को (**मध्यमशीखि**) बीच के मर्म स्थानों को काटते हुए के समान (**विबाधध्वे**) विशेषकर निवृत्त कर (**ततः**) उसके पश्चात् (**ओषधीः**) ओषधियों को (**प्रसर्पथ**) प्राप्त होओ।

याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः।
सर्वाः संगत्य वीरूधोऽस्यै संदत्त वीर्यम्।

यजु. 12.94

भावार्थ– मनुष्यों को चाहिए कि जो ओषधियाँ दूर या समीप रोगों का हरण करने वाली और शारीरिक बल प्रदान करने वाली हों, उनको प्राप्त करे तथा उनके द्वारा शरीर से रोगों को भगाकर बल प्राप्त करे, पृथ्वी से ओषधियों को खोदते समय यह ध्यान रखें कि उनकी जड़ नष्ट न होने पावे। इस पर यजुर्वेद का कहना है–

मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः।
द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम्।

यजु. 12.95

भावार्थ– जो पुरुष जिन ओषधियों को खोदे वह उनकी जड़ को नष्ट न करे। जितना प्रयोजन हो उतनी लेकर नित्य रोगों को हटाता रहे। ओषधियों की परम्परा को बढ़ाता रहे। जिससे सब प्राणी रोगों के दुःखों से बचकर सुखी हों।

अगले मंत्र में कहा गया है कि वैद्य लोगों के योग्य है कि आपस में प्रश्नोत्तर पूर्वक निरन्तर ओषधियों के ठीक–ठीक ज्ञान से रोगों से रोगी पुरुष को प्यार कर निरन्तर सुखी करें। उनमें जो उत्तम विद्वान हो वह मनुष्यों को वैद्यक शास्त्र पढ़ावें। संसार में जितने रोग हैं उन सबकी ओषधियाँ भी हैं।

नाशयित्री बलासस्यार्शस उपचितामसि।
अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी।

यजु. 12.97

भावार्थ – मनुष्यों को जानना चाहिये कि जितने रोग हैं उतनी ही उनकी नाश करने वाली ओषधियाँ भी हैं, इन ओषधियों को नहीं जानने वाले लोग रोगों से पीड़ित होते हैं। जो रोगों की ओषधि जाने तो उन रोगों की निवृत्ति करके सुखी हों।

अगले मंत्र में कहा गया है कि कोई ओषधि जड़ों से, कोई शाखा आदि से, कोई पुष्पों से, कोई फलों से, कोई सब अव्यवों से रोगों को नष्ट करती है।

मंत्र संख्या 101 में कहा गया है कि विरोधी वैद्य की ओषधि कभी न लें। यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 20 में कहा गया है कि दूर्वा ओषधि रोगों का नाश करने वाली तथा सुखों को बढ़ाने वाली है। अब इस विषय को आगे न बढ़ा कर यहीं विराम देते हैं। इति।

73, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राज.)

☞ पृष्ठ 02 का शेष

भगवान शंकर और दयानन्द

भी नहीं। वेदान्त बताता है कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाना है। वेद इस बात को अधिक विस्तार से कहता है। वह सूर्य को वाणी देता है, उससे कहलवाता है–मेरे अन्दर जो शक्ति है वह उसी की शक्ति है, मेरे भीतर जो प्रकाश है वह उसी का है, मेरे पास मेरा कुछ भी नहीं, यह सब तो ब्रह्म का है। वह नादियों को पानी देता है, उनसे कहलवाता है–सुनो ऐ संसार के लोगो! हमारे अन्दर कोई शक्ति नहीं, शक्ति केवल ईश्वर की है। प्रत्येक वस्तु में ईश्वर को दिखाकर वह कहता है–माया के अन्दर मायावाले को देखो, उसकी शक्ति को देखने के पश्चात् मनुष्य तुरन्त पुकार उठता है–

रोशन हैं मेरे जलवे, हर एक शै में लेकिन,
है चश्म कोर तेरी, क्या है कुसूर मेरा।

यह है वेद और वेदान्त का सच्चा स्वरूप। इसके पश्चात् भी जो लोग समझ नहीं सकते, उनसे पूछिये कि सारा वेदान्त तो ब्रह्म को प्राप्त करने के साधनों और उपायों से भरा हुआ है। ब्रह्म–प्राप्ति का दूसरा नाम ही वेदान्त है और यदि हम सब ब्रह्म हैं तो फिर ब्रह्म को प्राप्त करने का क्या अर्थ है? मैं तो मैं हूँ। अपने–आपको मैं नहीं खोजता, फिर ब्रह्म को खोजने का क्या अर्थ हुआ? यही कि मैं ब्रह्म नहीं हूँ, उसे खोज लूँ तो भी ब्रह्म कभी नहीं बन सकता। एक सहस्र दो सौ वर्ष पूर्व जगद्गुरु शंकराचार्य ने **"अहं ब्रह्म"** मैं ब्रह्म हूँ– ऐसी बात कही थी। तब से आज तक लाखों व्यक्तियों ने यह बात कही, परन्तु उनमें से एक भी ब्रह्म बन गया हो, ऐसा तो ज्ञात नहीं होता।

परन्तु श्री शंकर को उस समय की नास्तिकता को दूर करने के लिए 'एक आत्मा है' यही सिद्ध करना था, इसलिए प्रत्येक प्रकार की युक्ति देते चले गये। यह नहीं देखा कि उन्हीं की युक्ति स्वयं उनका खण्डन करती है।

ओ३म् शुभम्!

सत्यार्थ प्रकाश में 'परिच्छिन्न' शब्द 'साकार' का पर्याय नहीं

● भावेश मेरजा

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में 'परिच्छिन्न' शब्द का प्रयोग प्रायः मर्यादित, ससीम, एकदेशी (limited] localized etc.) इत्यादि अर्थ में ही प्रयुक्त किया है, साकार अर्थ में नहीं। जैसे कि –

1. "ऐसे परिच्छिन्न सामर्थ्य वाले एकदेश में रहने वाले को ईश्वर मानना, बिना भ्रान्तिबुद्धियुक्त जैनियों से अन्य कोई भी नहीं मान सकता।" (12वाँ समुल्लास)
   यहाँ परिच्छिन्न शब्द का प्रयोग सामर्थ्य के विशेषण के रूप में किया है, मर्यादित सामर्थ्य दिखाने के अर्थ में।
2. "जो सर्वव्यापक है वह परिच्छिन्न न होने से अज्ञान और बन्ध में कभी नहीं गिरता क्योंकि अज्ञान परिच्छिन्न एकदेशी अल्प अल्पज्ञ जीव में होता है सर्वज्ञ सर्वव्यापी ब्रह्म में नहीं।" (9वाँ समुल्लास)
   यहाँ भी परिच्छिन्न शब्द साकार के अर्थ में नहीं लिखा है, बल्कि सर्वव्यापक के विरोधी शब्द के रूप में लिखा है।
3. "ईश्वर निराकार है। जो साकार अर्थात् शरीरयुक्त है वह ईश्वर ही नहीं। क्योंकि वह परिमित शक्तियुक्त, देश काल वस्तुओं में परिच्छिन्न, क्षुधा, तृषा, छेदन, भेदन, शीतोष्ण, ज्वर, पीड़ादि सहित होवे।" (8वाँ समुल्लास)
   यहाँ साकार वस्तुओं को "देश काल वस्तुओं में परिच्छिन्न" लिखा है, परन्तु केवल देश में परिच्छिन्न नहीं बल्कि काल में भी परिच्छिन्न अर्थात् यहाँ भी मर्यादित जैसे अर्थ में ही यह शब्द आया है।
4. "वैसे ही कार्योपाधि अर्थात् अन्तःकरण की उपाधि के योग से ब्रह्म को जीव मानोगे तो हम पूछते हैं कि ब्रह्म व्यापक है वा परिच्छिन्न? जो कहो व्यापक उपाधि परिच्छिन्न है अर्थात् एकदेशी और पृथक्–पृथक् है तो अन्तःकरण चलता–फिरता है वा नहीं?" (7वाँ समुल्लास)
   यहाँ भी व्यापक के विरोधी अर्थ में तथा एकदेशी एवं पृथक्–पृथक् बताने के लिए परिच्छिन्न शब्द लिखा है, साकार अर्थ में नहीं।
5. "जैसे आकाश से मूर्त द्रव्य जड़त्व होने से और कभी पृथक् न रहने से एकता और आकाश के विभु, सूक्ष्म, अरूप, अनन्त आदि गुण और मूर्त के परिच्छिन्न ईश्यत्व आदि वैधर्म्य से भेद होता है।" (7वाँ समुल्लास)
   यहाँ भी परिच्छिन्न शब्द को विभु के विरुद्ध अर्थ में लिखा है, और अरूप के विरोधी शब्द के रूप में दृश्यत्व शब्द लिखा है। अर्थात् साकार के अर्थ में परिच्छिन्न शब्द का प्रयोग नहीं किया है।
6. "और जब एक देश में अज्ञान मानोगे तो वह परिच्छिन्न होने से इधर–उधर आता–जाता रहेगा।" (7वाँ समुल्लास)
   यहाँ भी परिच्छिन्न शब्द से एकदेशी भाव को व्यक्त किया गया है, साकारत्व के अर्थ में प्रयोग नहीं किया है।
7. "इसका अर्थ यह नहीं है, किन्तु जो जीव परमेश्वर का निषेध वा किसी एक देश, काल में परिच्छिन्न परमात्मा को माने वा उसकी आज्ञा और गुण, कर्म, स्वभाव से विरुद्ध हों अथवा किसी दूसरे मनुष्य से वैर करे, उसको भय प्राप्त होता है।" (7वाँ समुल्लास)
   यहाँ भी साकार अर्थ में परिच्छिन्न शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है, बल्कि देश तथा काल में मर्यादित इस अर्थ में हुआ है।
8. "(**प्रश्न**) जीव शरीर में भिन्न विभु है वा परिच्छिन्न? (**उत्तर**) परिच्छिन्न। जो विभु होता तो जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता।" (7वाँ समुल्लास)

यहाँ भी विभु – व्यापक के विरोधी शब्द के रूप में परिच्छिन्न शब्द का प्रयोग किया है, निराकार के विरोधी शब्द के रूप में नहीं। **पण्डित् गंगाप्रसाद उपाध्याय** जैसे विद्वान् ने सत्यार्थ प्रकाश के अंग्रेजी अनुवाद में परिच्छिन्न का ऐसा ही अर्थ लेते हुए लिखा है –

"**Question :** The soul being distinct from the body, does it pervade the body through and through or is it located at a particular place?
Answer : It is localized..."

उन्होंने परिच्छिन्न का अर्थ visible or having shape or form आदि नहीं लिया है।

"परिच्छिन्न" शब्द का प्रयोग शंकराचार्य जी ने गीता (8.17) भाष्य में **'कालपरिच्छिन्नाः'** – इस शब्द का प्रयोग किया है। इससे इतना तो प्रकट होता है कि इसका अर्थ काल, स्थान आदि की दृष्टि से सीमित, मर्यादित (limited) इत्यादि संगत है। परन्तु 'साकार' अर्थ करना ठीक नहीं।

ऐसे ही सांख्यकार ने भी प्रथम अध्याय में **"परिच्छिन्नं न सर्वोपादानम्"** सूत्र में इस शब्द का प्रयोग किया है।

दर्शन भाष्यकार **पण्डित उदयवीर शास्त्री** ने उपर्युक्त सूत्र में परिच्छिन्न का अर्थ करते हुए लिखा है –

"इस सूत्र में परिच्छिन्न पद का अर्थ – उत्पाद विनाशशील संघात है। यह 'छिदिर्' धातु से निष्पन्न पद है, जिसका अर्थ है टूट–फूट जाना। यद्यपि इस पद का प्रयोग साधारण रूप से एकदेशी पदार्थ के लिए होता है, जो किसी संकुचित प्रदेश में सीमित रहे, ऐसा अर्थ करने में भी यहाँ कोई आपत्ति नहीं,... सूत्र में परिच्छिन्न पद अनित्य की ओर भी संकेत करता है।"

महर्षि दयानन्द जी ने 'परिच्छिन्न' शब्द का अर्थ साकार नहीं, 'पृथक्–पृथक्' लिखा है। 24 सितम्बर 1877 को मौलवी अहमद हसन से जालन्धर में हुए एक शास्त्रार्थ में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए कहा था – *"द्रव्य उसको कहते हैं जिनमें गुण, क्रिया, संयोग, वियोग होने का स्वभाव पाया जावे, परन्तु जो द्रव्य परिच्छिन्न अर्थात् पृथक्–पृथक् हैं, उनका यह लक्षण है।"*

अतः दयानन्दीय ग्रन्थों में जीव के लिए प्रयुक्त 'परिच्छिन्न' शब्द का अर्थ 'साकार' करना उचित नहीं है।

8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,
जि. भरूच, गुजरात – 392015,
मो. 9879528247

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उप–प्रधान श्री रवीन्द्र कुमार जी नहीं रहे!

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उप–प्रधान, आर्य समाज (अनारकली) के कोषाध्यक्ष एवं डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के निर्वाचित सचिव श्री रवीन्द्र कुमार जी 30–12–2018 को हमें छोड़कर चले गये। श्री रवीन्द्र कुमार जी कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे।

दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए 'शान्ति–सभा' का आयोजन आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली में प्रादेशिक सभा और डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी की ओर से आयोजित किया गया जिसमें लगभग पाँच सौ से अधिक आर्यजनों ने श्री रवीन्द्र जी को अपनी श्रद्धांजलि दी।

प्रादेशिक सभा एवं डी.ए.वी. के प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी ने इस अवसर पर एक हार्दिक उद्बोधन में श्री रवीन्द्र कुमार जी को एक सच्चा आर्य बताते हुए कहा कि उनके चले जाने से सभा एवं डी.ए.वी. की भारी क्षति तो हुई ही है, स्वयं उन्हें भी गहरा आघात पहुंचा है। मान्य प्रधानजी ने शोक संतप्त परिवार जिसमें श्री रवीन्द्र जी के पुत्र, उनकी पुत्री, पुत्रवधू और दामाद के अतिरिक्त उनके बच्चों के प्रति अपनी और उपस्थित आर्य समुदाय की ओर से शोक–संवेदनाएँ प्रकट कीं और कहा कि दिवंगत आत्मा नैतिक, सामाजिक और आत्मिक गुणों का एक गुलदस्ता थे। उन्होंने परिवार का आह्वान किया कि प्रत्येक सदस्य दिवंगत आत्मा के एक–एक गुण को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प ले और इस प्रकार जब भी परिवार एकत्र हो तो श्री रवीन्द्र जी इन गुणों के रूप में मुस्कुराते हुए सदैव उपस्थित रहेंगे।

इससे पहले श्री महेश चोपड़ा जी ने श्री रवीन्द्र कुमार जी के साथ अपने अभिन्न संबंधों और उनके साथ बिताए अविस्मरणीय पलों को ताज़ा करते हुए श्री रवीन्द्र जी के जीवन और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

मार्च–1931 में जन्में श्री रवीन्द्र कुमार जी ने डी.ए.वी. लाहौर, डी.ए.वी. जालंधर में अपनी शिक्षा ग्रहण की और अपनी युवावस्था में हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता को समर्पित आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की। वे पंजाब में और केन्द्र सरकार में डिप्टी एकाउण्टेंट जनरल और डायरेक्टर (ऑडिट) के रूप में कार्य करने के बाद 1989 तक लोकसभा सचिवालय में कार्यरत् रहे और सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने अपनी शेष आयु आर्य समाज और डी.ए.वी. को समर्पित की।

इस अवसर पर प्रादेशिक उप–सभाओं, आर्य समाजों और डी.ए.वी. संस्थाओं की ओर से शोक–संतप्त परिवार के लिए अनेकों शोक–संदेश प्राप्त हुए।

शोक–सभा में ईश्वर से प्रार्थना की गयी कि वे दिवंगत आत्मा को उनके गुण और कर्मों के अनुसार उच्चतम स्थान दें और शोकग्रस्त परिवार के सदस्यों को इस गहन दुःख को सहने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें।

शब्दों की सार्थकता

● भद्रसेन

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पति र्बला तेषां तन्वो अघ दघातु मे।।

अथर्व. 1,1,1

शब्दार्थ– **ये** = जो, **त्रिषप्ताः** = तीन और सात **विश्वा** = सभी तरह के **रूपाणि** = आकारों को **बिभ्रतः** = धारण करते हुए धारण करने की शक्ति रखते हुए **परियन्ति** = सभी ओर आते–जाते हैं। **वाचस्पतिः** = वाणी का स्वामी, पालक **तेषाम्** = उन। (तीन– सात) के **तन्वः** = शरीर, आकार के **बला** = बलों, शक्तियों, महत्त्वों को **मे** = मुझ। (जीवन व्यवहार, विकास चाहने वाले) के लिए, मे अर्थात् मेरे लिए **अघ** = आज (ही, अभी) **दधातु** = धारण कराये, स्थापित करे, सिखाये।

व्याख्या – मन्त्र की दूसरी पंक्ति में वाचस्पति है, जो दधातु क्रिया का कर्ता है। वह ही विद्या, वाणी का स्वामी, व्यवस्थापक है। सूक्त का देवता = वृहस्पति है, जिसका शब्दार्थ तो बड़ों का स्वामी है, पर वह विद्वान्, विशेषज्ञ के अर्थ में प्रसिद्ध है, अर्थात् विद्या से सम्बद्ध है। आगे सूक्त में भी **'मयि एव अस्तु मयि श्रुतम्' 'सं श्रुतेन गमेमहि–मा श्रुतेन विराधिषि'** (अ. 1,1,4) जैसे वाक्य भी विद्या का प्रसंग सिद्ध करते हैं। वाणी (बोलने) तथा सुनने का विद्या से सीधा सम्बन्ध है।

त्रिषप्ता:–की यहाँ सारे मन्त्र में चर्चा है। इसके साथ ही **परियन्ति** क्रिया का सम्बन्ध है। अतः इस क्रिया का कर्ता **त्रिषप्ताः** ही है। **ये** और **तेषाम्** इसी के सर्वनाम हैं। तीन और सात यह इस शब्द का सीधा अर्थ है। अतः यहाँ उसकी चर्चा है – 1. जो तीन और सात रूप में है। 2. या ऐसी तीन संख्या वाली चीजें, जो सात जगह मिलें। या ऐसी सात–सात चीज़ें जो तीन हैं।

जैसे कि–

1. आयुर्वेद में तीन दोष– वात–पित्त–कफ और सात धातु–रस–रक्त–माँस–मज्जा–मेद्र–अस्थि–वीर्य हैं। चिकित्सा विज्ञान विद्या की एक शाखा है पर यहाँ दोष और धातु के साथ शरीर में इन्द्रियाँ, अन्तःकरण तथा प्राण भी हैं।

2. **त्रिषप्ताः** शब्द से स्वाभाविक रूप से तीन–सात सामने आते हैं। जैसे कि संगीत में सात स्वर हैं– सा–रे–गा–मा–पा–धा–नी–सा की मान्यता है। ऐसे ही वहाँ सातषडज–ऋषभ... आदि भी हैं। ऐसे ही आलाप–संलाप (जिनमें आरोह–अवरोह, संकोच–विकास के रूप होते हैं।)

3. एक क्षेत्र से सम्बद्ध –सत्–रज–तम की त्रिक। ऐसी कोई तत्सम्बद्ध सात त्रिकें।

4. त्रिषप्ताः में तीन+सात का योग (=जोड़) मानें, तो गणित के 1 से 9 तक अंक तथा शून्य (जीरो) मिलाकर दस बन जाते हैं। दशम् लव पद्धति प्रसिद्ध ही है। गणित के प्रत्येक प्रश्न, स्थिति में इन्हीं (दस) का फैलाव है। इन्हीं अंकों का आना–जाना है। अतः गणित में तीन+सात के योग (10) का अच्छा ताल–मेल है। अंक गणित विद्या की ही शाखा है।

5. संस्कृत भाषा के शब्दों के रूप– तीन वचनों और सात विभक्तियों में प्रसिद्ध हैं। हाँ, सम्बोधन या सम्बन्ध (षष्ठी) विभक्ति रह जाती है।

6. भाषा – व्याकरण का एक नाम शब्दानुशासन है। आजकल भाषाशास्त्र चलता है। वर्ण ही हर भाषा में मूल–बिन्दु है। जिनसे विविध रूप वाले शब्द बनते हैं। शब्दों से वाक्य बनते हैं। वाक्य ही भाषा की भावपूर्ण इकाई है। वाक्य द्वारा ही पूरी बात सामने आती है। सार्थक शब्दों भरी भाषा ही विद्या का माध्यम बनकर परिचय कराती है।

मन्त्र कह रहा है, कि ये तीन–सात सारे रूपों को धारण करते हुए सर्वत्र आते–जाते हैं। जैसे कि हर भाषा में वर्णों से शब्द बनते हैं अर्थात् अलग–अलग शब्दों में ये वर्ण ही समाए होते हैं। यथा–अमर, आहार, अचरज, जीवन आदि। इस प्रकार इन सीमित वर्णों से लाखों शब्द बनते हैं।

संस्कृत, हिन्दी आदि भाषा में स्वर –व्यञ्जन के भेद से दो प्रकार के वर्ण हैं। स्वरों में मुख्य – अ–इ–उ तीन हैं। आगे इनके ही दीर्घ और अ+इ–ए, अ+उ–का ओ गुण रूप जहाँ है, वहाँ ऐ, और वृद्धि रूप हैं। हाँ, एक ऋ रह जाता है।

व्यञ्जन की दृष्टि से अलग–अलग व्यंजन को न गिनकर कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, अन्तःस्थ और उष्म यह सात संख्या साधी जा सकती है।

तीन गुना सात–इक्कीस (3×7= 21) मानने पर बहुत ही कम भारतीय भाषाओं में इतने सीमित वर्ण हैं। हाँ, बाल्टिक में – 17; लैटिन–हिब्रू – 20; फ्रेंच– 25, अंग्रेजी – 26, स्पेनिश– 27; ऐसी स्थिति में सभी ध्वनियाँ उनमें परिगणित नहीं होतीं। भारतीय भाषाओं में स्वर व्यंजन अधिक ही हैं। पुनरपि इस मन्त्र की संगति वर्णों के साथ अच्छे रूप में सामने आती है।

हाँ, बला शब्दों की सार्थकता और साक्षर (स+अक्षर) तदनुरूप आचरण का स्मरण कराता है।

182 शालीमार नगर, होशियारपुर
मो. 9464064398

स्वामी श्रद्धानंद और शिक्षा व्यवस्था

● **नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'**

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उस राष्ट्र के भविष्य के निर्माण का साधन होती है। राष्ट्र की मजबूत बुलंद इमारत जिन ईंटों को जोड़कर बनाने की परिकल्पना की जाती है, उन्हीं ईंटों के निर्माण की भट्ठी उस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था होती है। इसे यदि और अधिक स्पष्ट करें तो राष्ट्र के भविष्य का निर्माण उस राष्ट्र के भविष्य के सभ्य नागरिक अर्थात् जो आज के विद्यार्थी हैं और प्रचलित शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उन्हीं पर निर्भर करता है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या हमने अपने राष्ट्र के उन्नत भविष्य की परिकल्पना करके राष्ट्र निर्माण की मूल इकाई अर्थात् सभ्य नागरिकों के निर्माण हेतु उचित शिक्षा व्यवस्था का चयन किया है, क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली सभ्य सुसंस्कृत संस्कारवान सुशील नागरिकों के निर्माण में समर्थ है।

इस यक्ष प्रश्न के उत्तर को खोजने के लिए हम स्वतंत्रता प्राप्ति के समय अपने राष्ट्र में उपलब्ध शिक्षा प्रणालियों पर दृष्टिपात करते हुए चिंतन करते हैं। हमारे राष्ट्र की प्राचीनतम सनातन पुरातन शिक्षा प्रणाली गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था थी, जिसकी परिकल्पना क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्ष पद्धति के रूप में पुनः की थी। महर्षि दयानन्द के आर्ष पद्धति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के स्वप्न को मूर्त रूप देव दयानन्द के मानस पुत्र के नाम से विख्यात स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुलों की स्थापना के रूप में दिया। इन गुरुकुलों की स्थापना में स्वामी श्रद्धानंद ने अपना सर्वस्व आहूत कर दिया और अपनी समस्त संपत्ति उदाहरण बनकर दान देते हुए गुरुकुलों की स्थापना की। इतना ही नहीं अपितु स्वामी श्रद्धानंद ने प्रथम विद्यार्थियों के रूप में अपने पुत्रों को इस कठिन तपस्या की दिनचर्या वाली शिक्षा पद्धति में डाला। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में ब्रहमचारी विद्यार्थी अपने माता–पिता के लाड़–प्यार से अलग आचार्य के निर्देशन में रहते हुए विद्या का अर्जन और संस्कार प्राप्त करता था। हम कह सकते हैं कि आचार्य विद्यार्थी को संस्कार देकर एक नया जन्म प्रदान करता था।

दूसरी शिक्षा प्रणाली त्यागी तपस्वी श्वेतवस्त्रधारी संन्यासी महात्मा हंसराज द्वारा प्राचीन और नवीन का मिश्रण करके एक आंदोलन के रूप में स्थापित की गई दयानन्द एंग्लो वैदिक डी.ए.वी. की शिक्षा व्यवस्था थी। तीसरी शिक्षा प्रणाली लार्ड मैकाले की वह शिक्षा व्यवस्था थी जिसे लार्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में यह उद्घोष करके उस समय ब्रिटेन की कालोनी बने गुलाम देश पर यह कहकर थोपा था कि इस शिक्षा व्यवस्था से मैं इस देश को सदा सर्वदा के लिए मानसिक रूप से गुलाम बना दूँगा। मैकाले की यह शिक्षा व्यवस्था हमारे राष्ट्र के भावी निर्माण के लिए जिम्मेदार विद्यार्थियों को उनकी महान सनातन पुरातन वैदिक संस्कृति की जड़ों से काटने की एक सोची समझी साजिश थी। कोई भी वटवृक्ष कितना बड़ा घना व विशाल हो लेकिन जब अपनी जड़ों से कट जाता है वह अन्ततः संस्कृति संस्कारों के खाद पानी के अभाव में सूखकर ठूंठ बनकर गिर पड़ता है और ऐसे में उसे कमजोर हुए वृक्ष में भ्रष्टाचार अनैतिकता की दीमक उसे अन्दर ही अन्दर खोखला कर देती है। पाश्चात्य भौतिकतावाद, भोगवाद की फिरतरत अंदर से खोखले हुए वृक्ष को धराशायी कर देती है।

लेकिन शायद ये देश का दुर्भाग्य ही रहा कि देश की स्वतंत्रता के समय के हमारे देश के नेताओं, नीति नियंताओं ने शायद अपनी मानसिक गुलामी के कारण हमारे देश के लिए दासता की परिचायक मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को हमारे लिए चुना। इस शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत हम डॉक्टर, मैनेजर, क्लर्क आदि तो तैयार कर सकते हैं लेकिन उन्हें संस्कार देकर एक अच्छा मनुष्य बनाने की कोई विधि मैकाले

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

गतांक से आगे...

मुझे इनाम का लालच नहीं

● स्व. श्री बलराज भल्ला

जेलरों की तरह जो कैदी पुराने हो जाते हैं, वे भी अपना काम निकालने के लिए काफी चालाक हो जाते हैं। कम से कम दूसरों की पकड़ में आने से तो ज़रूर ही बच जाते हैं। दूसरे, कैदी जब जेल में आते हैं और 'उनसे पूछा जाता है, क्या काम जानते हो?' तो वे उस काम का नाम लेते हैं, जिस पर जाना उनको बिल्कुल मंजूर नहीं होता। जेलर अपने रिवाज के मुताबिक उनको उस काम पर कभी नहीं भेजते। सच तो यह है कि जेलर और कैदी की लड़ाई में वह मारा जाता है, जो अपने दिल का हाल दूसरों को दे देता है। जेलर उन कैदियों से डरते हैं, जो उनके भेदों से वाकिफ़ होते हैं। वे जानते हैं कि उनके अर्दली थोड़ा बहुत रुपया रास्ते में ही रख लेते हैं, परन्तु वे इस बात का कोई नोटिस नहीं लेते। इसी तरह जिस कैदी के मुतल्लक दारोगा जानता है कि वह अमुक काम से घबराता है, वह कैदी कभी दारोगा के सामने सिर नहीं उठा सकता। बेचारे नये कैदी इन बातों को क्या समझते हैं, अपना दिल दूसरे को दे देते हैं और फिर तकलीफ उठाते हैं। जब मैं दर्जीखाने में काम किया करता था, तो खाली वक्त में कालीनों का काम देखा करता था। एक बार साहिब एक अखबार पर छपी हुई एक कालीन की तस्वीर ले आये और पूछने लगे, क्या कोई ऐसा कालीन बना सकता है? सब कारीगरों ने इन्कार कर दिया। कारण, ये लोग नमूना देखकर उससे छोटा–बड़ा कालीन तो तैयार कर सकते हैं, परन्तु कोई नया (ओरिजिनल) काम नहीं कर सकते। मैंने इस काम के लिए अपने आपको प्रस्तुत किया। इसकी वजह यह थी कि मैं कालीनों के काम पर जाना चाहता था, क्योंकि वहाँ रिहाई अधिक मिलती थी। साहिब को कालीन की आवश्यकता थी, इसलिए उसने मुझे उस काम पर भेज दिया। जब साहिब का कालीन तैयार हो गया, तो आपने बहुत प्रसन्न होकर मुझे 'एक दिन' इनाम में दे दिया। यदि मैं साधारण कैदी होता और साहब भी कंजूस–दिल न होता, तो निःसंदेह मुझे 'एक महीना' मिल जाता। खैर 'दिन' मिलने की नींव तो रखी गयी। कुछ देर बाद मैंने इस काम पर महीनों रिहाई प्राप्त की। साहिब बहादुर ने एक 'दिन' तो दे दिया, पर उनके दिल में अफसोस बहुत लगा। आपने मुझसे पूछा 'काम कैसा है?' मैंने कह दिया 'अच्छा है।' बस मेरी किस्मत का फ़ैसला हो गया। साहिब ने एकांत में होते ही, मुझे इस काम से बदल कर किसी सख़्त काम पर भेजने की आज्ञा दे दी। मुझे भी इस बात की खबर लग गयी। दूसरे रोज़ ज्यों ही साहिब अन्दर आये, मैंने आप से कहा 'मुझे कुछ कहना है।' आपने पूछा 'क्या?'। मैंने कहा 'साहिब, कालीनों के काम में मुझे तकलीफ़ है। आपका काम ख़तम हो गया है। इसलिए आप मुझे अब मेरे पुराने काम पर भेज दें।' साहिब बहादुर ने उसी समय अपना मन बदल दिया और मैं कालीनों पर ही रहा।

ज्यों–ज्यों समय व्यतीत होता जाता है, मनुष्य लोगों की प्रकृति से फ़ायदा उठाना सीख जाता है। जब मैं कालीनों के काम पर निश्चित तौर पर आ गया, तो उस्ताद यासीन, कालीनों का कारीगर किसी बदमाशी के सबब चक्कियों में भेज दिया गया। मेरी इच्छा थी कि समय भुगतने से पहले ही बाहर आ जाये। वैसे दो–चार बार साहिब से इशारा भी किया, पर कुछ न बना। यह मेरी नातजुरबेकारी थी। कुछ देर बाद जब मुझे जेल का और ज्ञान हो गया, तो एक इससे भी कठिन काम किस सुगमता से हो गया, निम्नलिखित घटना से प्रतीत हो जायगा। सरदार मुंशासिंह एक उमर पोलिटिकल कैदी थे। आपका आचार और व्यवहार अपने सब साथियों से कहीं अधिकतर उच्च श्रेणी का था। आप लोग एक महीना कार रंगने के लिए भेजे जाते थे और तीन मास चक्की में। आपके साथी तो जब तीन महीने चक्की पीसकर एक महीने के लिए कारखाने में आये, तो साधारण और सुगम कामों पर नियत हो गये। मैंने आपको सलाह दी कि कालीनों पर आ जायें, अन्त में फायदा रहेगा। आप एक मास के अन्दर ही वह काम सीख गये, जो साधारण कैदी वर्षों में सीखते हैं। आपका मास तो खतम हो गया, पर जो कालीन बुना जा रहा था, वह पूरा न हुआ। इसलिए आपको सात दिन की एक्सटैन्शन मिल गयी। अभी आपकी एक्सटैन्शन खतम न हुई थी कि कालीन खतम हो गया। मैंने आपके आगे एक और कालीन बढ़ा दिया। जब एक्सटैन्शन खत्म हुई, तो कालीन बहुत पड़ा था। यदि वे चक्की में चले जायें, तो पीछे से काम कैसे चले? इसी तरह आपको तकरीबन छः महीने गुज़र गये। आखिर साहिब ने तंग आकर हुक्म दे दिया– 'कुछ परवाह नहीं, काम बंद होता है, तो हो जाने दो, चक्की में भेज दो।' दूसरे दिन ही आप चक्की में भेज दिये गये। सुपरिंटैडेण्ड साहिब की मेम साहिबा सप्ताह में एक–दो बार अपना व किसी अपने मित्र का गलीचा बनते देखने आया करती थीं और अक्सर आधे घंटे के करीब वहाँ बात–चीत किया करती थीं। अबकी बार जब आप आईं, तो मैंने बात–चीत करते हुए आपको कई उन नमूनों का ज़िक्र किया, जो अभी तक मेरे दिमाग में थे। आपके ख्याल में एक नमूने का वर्णन घर कर गया। आपकी दूसरी विजिट से पहले मैंने अपने ख्याल को नक्शे के रूप में तैयार कर रखा। इस बार आपकी बहन भी जो आपको मिलने के लिए आई हुई थीं, आपके साथ जेल के अन्दर आईं। मैंने ड्राइंग पेश किया। दोनों उस पर इस कदर मोहित हुईं कि आपने इच्छा प्रकट की कि इसे अभी से शुरू कर दो ताकि क्रिसमस से – जो निकट ही थी – पहले तैयार हो जाय। मैंने आप से जेलर के नाम हुक्म भेज देने के लिए कहा। दूसरे रोज़ जेलर को साहिब ने हुक्म दे दिया कि क्रिसमस से पहले नया नमूना तैयार हो जाय। अब मेरा समय आ गया। जब मुझे सरकारी तौर पर हुक्म मिला, तो मैंने कह दिया 'तैयार तो अवश्य हो जायगा, पर क्रिसमस के बाद।' मुझे बार–बार रिहाई के दिनों का लालच दिया गया, परन्तु मैं अपनी बात पर कायम रहा। जब यह बात मेम साहिबा के कानों तक पहुँची, तो आप अपनी बहन के साथ मुझे मिलने आईं। मैं अब भी अपनी जुबान पर कायम रहा। आखिर आपने कहा 'क्या कोई तरीका नहीं निकल सकता? मुझे निराश मत करो, मैं साहिब से बहुत इनाम देने के लिए कहूँगी।'

'मेम साहिबा, आप मुझे समझती नहीं।' मैंने उत्तर दिया। 'मुझे इनाम का लालच नहीं। मैं तो केवल एक लेडी को खुश करने के लिए इतनी तकलीफ उठाता हूँ।'

'हम मश्कूर हैं' आपने कहा 'अब भी क्रिसमस से पहले हमारा काम कर दो।'

'इसके लिए केवल एक ही तरीका है', मैंने सोच कर उत्तर दिया।

'क्या?' नवीन आशा से प्रसन्न होकर आपने पूछा।

'यदि सरदार मुंशासिंह मुझे सहायता के लिए मिल जाये, तब यह काम हो सकेगा।'

'वह कहाँ है?'

'चक्कियों में'

'वहाँ क्यों रहता है?'

'साहिब की इच्छा।'

'कारण?'

'पोलिटिकल कैदी होने के कारण वह ख़तरनाक समझा जाता है।'

'क्या वह सचमुच ही ख़तरनाक है?' आपने पूछा।

'बिल्कुल नहीं।' मैंने अपना सच्चा विश्वास प्रकट कर दिया।

दूसरी सुबह ही सरदार जी अपनी बेड़ी झनझनाते हुए अपने पुराने काम पर आ गये।

देहली–बम–रहस्योद्घाटन से साभार

☞ पृष्ठ 06 का शेष

स्वामी श्रद्धानंद और ...

की इस शिक्षा प्रणाली में नहीं है, शायद यही हमारे समाज के निरन्तर अधोगति का प्रमुख कारण है।

आज भी यदि हम पुनः अपनी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति की जड़ों से जुड़कर अपने बच्चों को संस्कार देते हुए भविष्य का एक सभ्य, राष्ट्र से प्रेम करने वाला नागरिक बनाना चाहते हैं तो हमें पुनः स्वामी श्रद्धानंद द्वारा स्थापित गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को अपनाना होगा। कम से कम शिक्षक तैयार करने के लिए जिन पर भविष्य के नागरिकों के निर्माण का विद्यार्थियों को संस्कार देकर तैयार करने का महत्त्वपूर्ण गुरुत्तर दायित्व है वह शिक्षक तो अवश्य ही गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की भट्ठी में तपकर निकले हों। आम विद्यार्थियों के लिए महात्मा हंसराज द्वारा संचालित प्राचीन और नवीन के मिश्रण से तैयार डी. ए.वी. की शिक्षा प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है। स्वामी श्रद्धानंद द्वारा पुनर्स्थापित आर्ष पद्धति की गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली है। यह ऐतिहासिक तथ्यों से सिद्ध हो चुका है। क्योंकि जब इतिहास में प्रथम बार जब गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को भंग करते हुए महाभारत काल में महाराजा धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रों के प्रेम में अंधे होकर गुरु द्रोण को अपने राज्य के आधीन रहकर कौरवों को शिक्षा देने के लिए विवश किया जिसके कारण दुर्योधन आदि कौरव उद्दंड हो गए क्योंकि उनके मन में सदैव यह भाव रहा कि हमारे शिक्षक तो हमारे पिता के वेतनभोगी वित्तपोषित कर्मचारी हैं और यह एक महत्त्वपूर्ण कारक महाभारत के युद्ध का कारण बना।

अतः यदि हम उन्नत समृद्ध गौरवशाली मजबूत राष्ट्र की बुलंद इमारत का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें शिक्षा व्यवस्था के उन खाँचों में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा जो इस राष्ट्र की बुलंद इमारत में प्रयोग होने वाली ईंटों अर्थात् विद्यार्थियों का निर्माण कर सकें।

602 जी एच 53
सैक्टर 20 पंचकूला
मो. 09467608668

सफलता की कुँजी

● अशोक जौहरी

जैसा शीर्षक से स्पष्ट है किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए अथक, अनवरत प्रयास की आवश्यकता होती है। सफलता पाने के लिए हमारा उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार ही लक्ष्य चुनना चाहिए। जब लक्ष्य हमारे सम्मुख हो तो अपने विवेक से उसकी प्राप्ति का साधन जुटाना चाहिए। लक्ष्य प्राप्ति के लिए ईश्वर की अनुकम्पा भी आवश्यक है। इसके हेतु हमें लक्ष्य प्राप्ति के लिए उत्साह व आशावान होना भी आवश्यक है। कई बार असफल होने पर भी हमें प्रयत्नशील रहना चाहिए तथा किसी योग्य गुरु व अन्य विद्वान् लोग जो इस उद्देश्य को प्राप्त कर चुके हैं उनसे भी हमें सीखना चाहिए। अपने गुरुजनों के प्रति श्रद्धा विश्वास व उसकी कृपा भी आवश्यक है। इसके साथ–साथ हमें अपने शरीर को निरोग व नियमित भोजन, पौष्टिक आहार व व्यायाम भी आवश्यक है। इन सब बातों का समावेश ही मनुष्य को उसके उत्कर्ष पर पहुँचाता है। विद्यार्थियों को उपरोक्त बातों पर ध्यान देना चाहिए। इन सबके बल पर ही कोई मनुष्य अपने कार्य में सफल हो सकता है। विद्यार्थियों को ध्यान देना चाहिए कि किसी गुरु के बताए हुए पाठ को अच्छी तरह समझ कंठस्थ कर गुरु के समक्ष समय–समय पर परीक्षा देनी चाहिए। तभी वह सभी विषयों में पारंगत होकर अच्छे नम्बर से पास हो सकेगा। इसके लिए धैर्य की अति आवश्यकता होती है। जिस प्रकार कृषक उत्तम खेती के लिए अच्छे बीज, उपयुक्त खाद व उचित जमीन व समय का ध्यान रखता है तथा समय–समय पर जल सिंचन कर समय आने पर ही उसकी फसल लहलहाती है। धैर्य व ईश्वर की कृपा के चलते ही वह सफल होकर धन धान्य से सम्पन्न हो जाता है। मनुष्यों की भी यही गति होती है।

यह नियम किसी भी व्यवसाय, नौकरी व अन्य कोई लक्ष्य प्राप्ति के लिए भी लागू होता है। कहने का तात्पर्य है किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए परिश्रम का ही हाथ होता है। सन्तों ने कहा है–

"करत करत अभ्यास के जड़मत होत सुजान, रस्सी आवत जावत सिल पर पड़त निसान।।"

As per English Saying
There is no shortcut to hard work.
'Knowledge is power'

इन सबका आशय भी एक ही है। परिश्रम करने के सिवाय कोई अन्य रास्ता नहीं।

ईश्वर भी प्रयत्नशील पुरुषों से प्रसन्न रहते हैं और उन पर आस्था रखने वालों का प्रयत्न कभी व्यर्थ नहीं होने देते।

वेदों के अनुसार पुरुषार्थी व्यक्ति ही संसार में पूजनीय होता है तथा संसार में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

"कृत ही फलती सर्वत्र न अकृत भुज्यते कदाचित" अर्थात् कर्म करने से ही फल की प्राप्ति होती है। मनुष्य दो ही प्रकार का कर्म करता है अशुभ अथवा शुभ। सभी कर्म उसके चित्त में स्थित पूर्व जन्मों के संस्कारों का कर्माश्य है। मनुष्य जो भी विचार करता है, कर्म व आचरण तथा वाणी जो उसको सुखद लगता है वही करता है। अच्छे–बुरे कर्म वह स्वभाव के कारण करता है।

ऋषि पतंजलि के अनुसार पुरुषार्थी व्यक्ति के लक्षण इस प्रकार हैं।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, बह्मचर्य, अपरिग्रह, शुचिता, संतोष, श्रम, दानवीरता, स्वयं निरीक्षण तथा आत्मा को तृप्त करने वाला होता है।

वह व्यक्ति व्यवहार कुशल मृदुल वाणी, अल्पमार्षि व सब की भावना की कद्र करता हुआ शील को प्राप्त करता है।

इसी के प्रताप से मुनष्य सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है। लक्ष्य की प्राप्ति सदा दानवीर प्रवृत्ति के कारण, क्षमाशील व सबको साथ लेकर, उनका उत्थान करने का प्रयत्न करता है।

उस व्यक्ति में सोम व इन्द्र का वास होता है। यह दोनों शक्तियाँ स्वयं ईश्वर प्रदत्त है। सोम से मनुष्य संयमशील व ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला होता है। बोलने से पहले अच्छी तरह जाँच परख कर मृदु वाणी से बोलता है, जिससे सबका कल्याण होता है। निर्मल चित्त वाला मनुष्य ही सब कर्म में समर्थ है। यह सब बातें सभी मनुष्यों पर समान रूप से लागू होती है। विद्या ग्रहण करना तथा किसी व्यवसाय व उद्योगपति, अथाह धन तथा ऐश्वर्य, स्वर्ग सभी ईश्वर की कृपा से होता है। वह धन व विद्या सभी वर्गों के लोगों से बाँटता है। धन का सुख पूर्वक अपनी आवश्यकता अनुसार भोग करता हुआ अपना समस्त धन संसार के उत्थान के लिए लगाता है। यही उच्चशिक्षा प्राप्त विद्यार्थी व अन्य लोगों पर लागू होती है। यही विद्या का वास्तविक उद्देश्य है।

उपरोक्त विचारों को व्यक्त करने का मेरा तात्पर्य पराश्रम की महिमा का वर्णन करना मात्र है। इसी पर चल कर मनुष्य अभीष्ट को पा लेता है।

इन्द्रापुरम् (गाजियाबाद)

☞ पृष्ठ 03 का शेष

नैतिक मूल्यों की शिक्षा ...

के सबसे सफल उद्यमियों में से एक श्री रतन टाटा (Ratan Tata) पर भी ये बात निःसंदेह लागू होती है! एक कहानी जो रतन टाटा की महानता को बयाँ करती है, कुछ इस प्रकार है – बात तब की है जब टाटा समूह ने 1998 में टाटा इंडिका कार बाज़ार में निकली थी। टाटा इंडिका कार को मार्किट में रेस्पॉंस अच्छा नहीं मिला। तब कुछ करीबी लोगों और साझेदारों ने रतन टाटा को कार व्यापार में हुए नुकसान की पूर्ति के लिए कार व्यापार किसी और कंपनी को बेचने का सुझाव दिया। चूँकि कार लांच करने की योजना रतन टाटा की स्वयं की थी और उससे नुकसान हुआ था तो रतन टाटा ने यह सुझाव ठीक समझा। वे साझेदारों के साथ अपनी कार कंपनी बेचने का प्रस्ताव फोर्ड कंपनी के पास लेकर गए। फोर्ड कंपनी अमेरिका में बनने वाली कारों का केंद्र थी।

फोर्ड कंपनी के साथ रतन टाटा और उनके साझेदारों की मीटिंग करीब तीन घंटे तक चली। फोर्ड कंपनी के चेयरमैन बिल फोर्ड ने रतन टाटा के साथ कुछ रुखा व्यवहार किया और बातों ही बातों में ये कह दिया कि जब तुम्हें इस व्यापार के बारे में कोई जानकारी नहीं है तो फिर तुमने इस कार को लाँच करने में इतना पैसा क्यों लगाया। हम तुम्हारी कंपनी खरीद कर तुम्हारी बहुत बड़ी मदद करने जा रहे हैं। कई बार इंसान अपनी सफलता की धुन में कुछ ऐसी बातें कह जाता है जो उसे नहीं कहनी चाहिए।

मीटिंग के बाद रतन टाटा (Ratan Tata) ने तुरंत वापस लौटने का फैसला किया। पूरे रास्ते वे मीटिंग में हुई उस बात के बारे में सोचकर अपमानित–सा महसूस कर रहे थे और वही बात उनके ज़ेहन में बार–बार आ रही थी। कुछ ही वर्षों में शुरुआती झटके खाने के बाद रतन टाटा का कार बिज़नेस एक अच्छी खासी लय में आगे बढ़ने लगा और बेहद मुनाफ़े का व्यवसाय साबित हुआ। वहीं दूसरी तरफ फोर्ड कंपनी (Ford Motors) बाज़ार में औंधे मुँह गिर गई थी। फोर्ड कंपनी सन् 2008 के अंत तक लगभग दिवालिया होने की कगार पर थी। तब रतन टाटा ने फोर्ड कंपनी के सामने उनके लक्ज़री कार ब्रांड जैगुआर–लैंड रोवर (Jaguar Land rover) को खरीदने का प्रस्ताव रखा और बदले में फोर्ड को अच्छा–ख़ासा दाम देने की पेशकश की। चूँकि बिल फोर्ड पहले से ही जैगुआर–लैंड रोवर की वजह से घाटा झेल रहे थे तो उन्होंने यह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। बिल फोर्ड बिल्कुल उसी तरह अपने साझेदारों के साथ बॉम्बे हाउस (बॉम्बे हाउस टाटा समूह का मुख्यालय है) पहुँचे, जैसे कभी रतन टाटा बिल फोर्ड से मिलने उनके मुख्यालय गए थे। मीटिंग में ये तय हुआ कि जैगुआर–लैंड रोवर ब्रांड 9300 करोड़ में टाटा समूह के अधीन होगा और वैसा ही हुआ। इस बार भी बिल फोर्ड ने वही बात दोहराई जो उन्होंने मीटिंग में रतन टाटा से कही थी, बस इस बार बात थोड़ी सकारात्मक थी। उन्होंने कहा कि आप हमारी कंपनी खरीद कर हम पर बहुत बड़ा एहसान कर रहे हैं। आज जैगुआर–लैंड रोवर टाटा समूह का हिस्सा है और बाज़ार में बेहतर मुनाफे के साथ आगे बढ़ रहा है। इस प्रसंग से हम ये अनुमान लगा सकते हैं कि महान लोग कई बार चुप रहकर भी कितनी बड़ी–बड़ी उपलब्धियाँ हासिल कर जाते हैं।

रतन टाटा अगर चाहते तो बिल फोर्ड को उस मीटिंग में ही करारा जवाब दे सकते थे पर रतन टाटा अपने सफलता के नशे में चूर नहीं थे। यही वो गुण है जो एक सफल और एक महान इंसान के बीच का अंतर दर्शाता है। जब व्यक्ति अपमानित होता है, तो उसका परिणाम क्रोध होता है। लेकिन महान् लोग अपने क्रोध का उपयोग अपने लक्ष्यों की पूर्ति में करते हैं। महान् लोग अपने प्रतिद्वंद्वियों को बिना कुछ कहे ही शिकस्त दे जाते हैं।

विवेकानंद जी ने कहा था – "हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।" इसीलिए बच्चों को प्रतिस्पर्धात्मक (Competitive) शिक्षा के साथ–साथ गुणात्मक शिक्षा देने की परम्परा का पालन हमारी संस्था वर्षों से कर रही है। नैतिक मूल्यों के बिना शिक्षा और ज्ञान की सार्थकता संभव नहीं है। कहते हैं कि कच्चे घड़े को हम अपनी इच्छानुसार आकार प्रदान कर सकते हैं परंतु पकने के पश्चात्

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

अ

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

पाठक वृन्द! अब तक आप लोगों ने अनेक आलेखों (लेखों) के अनेक शीर्षक पढ़े होंगे परन्तु यह संभवतः सबसे छोटा शीर्षक होगा। इससे छोटे शीर्षक की कल्पना भी नहीं कर सकते। 'अ' वाक्य नहीं, शब्द नहीं, वर्ण है, वर्ण में भी स्वर है और स्वर में प्रथम ह्रस्व है 'अ' साहित्य सृजन का मुख्य द्वार, माननीय अभिव्यक्ति का प्रथम अभिश्रित, स्वतन्त्र स्वर।

कमाल है इसका, यह किसी पर आश्रित नहीं, पर अन्य वर्ण इस पर आश्रित। और तो रहा 'ओ३म्' भी इसके बिना 'ओ३म्' नहीं। 'ओ३म्' में तीन ही तो अक्षर होते हैं– अ, उ और म्। यदि 'अ' अड़ जाय कि मैं नहीं आता, शुरू में तो 'ओ३म्' बन ही नहीं सकता क्योंकि 'अ' और 'उ' के मिलने से गुण संधि के अनुसार ही तो 'ओ३म्' बनता है। 'अ' नहीं तो ओ३म् भी नहीं।

आप थोड़ा विचार कीजिए। व्यंजन तो बिना स्वर के अपंग हैं। आप बोलना चाहेंगे – 'क' इसमें भी 'अ' की ध्वनि ही इसकी आत्मा है। 'क' में से 'अ' हटा दीजिए, शेष रहा 'क्', हलन्त क् अर्थात् लंगड़ा व्यंजन, दूसरे के सहारे चलने वाला। 'अ' है तो ज्ञान है, अ नहीं तो अज्ञान है। स्वरों के बिना व्यंजन आधे–अधूरे और अपंग हैं और स्वर भी बिना 'अ' के निष्प्राण कहे जा सकते। प्रत्येक स्वर में अव्यक्त रूप में 'अ' की सत्ता विद्यमान है। बहुत सारे विद्वानों को ज्ञात होगा, एक बार देवनागरी लिपि में सुधार के लिए सुझाव आए थे। उनमें एक सुझाव यह था कि 'अ' में ही दूसरे स्वरों की मात्राओं को जोड़ दिया जाय, जैसे अि, अी, अु, अू (इ, ई, उ, ऊ) आदि।

'अ' के प्रभुत्व को कोई कम नहीं कर सकता। इसका झंडा सबसे आगे रहता है। योग दर्शन पढ़ना हो तो शुरू में 'अ' के आगे नत मस्तक होना पड़ेगा –अथ योगानुशासनम्। वेदान्त दर्शन भी इसको नमन करता है– अथातो ब्रह्म जिज्ञासा, पाणिनी मुनि ने भी इसके सम्मुख मस्तक झुका दिया। चौदह सूत्रों का शुभारम्भ भी 'अ' से – अइउण, ऋलृक् आदि। आप सोच रहे होंगे कि इस हठीले 'अ' की जन्मस्थली क्या हो सकती है, तो लीजिए, मैं आपको बता ही देता हूँ। इस सपूत का जन्मस्थान कण्ठ प्रदेश है – (अकुह विसर्जनीयां कण्ठः) 'उ' का जन्मस्थान है– ओष्ठ और म् की जन्मभूमि है नासिका।

माण्डुक्योनिषद् में तो न केवल 'अ' को अपितु 'उ' और 'म्' को भी 'ओ३म्' के तीन खम्भों के रूप में वर्णित किया है। एक भी खम्भा कम हुआ या इधर–उधर हुआ तो 'ओ३म्' का भवन ध्वस्त। आइये माण्डुक्योपनिषद् के आधार पर 'अ' की महत्ता और 'ओ३म्' के स्वरूप को समझने का प्रयास करें। पहले 'अ' पर विचार करें। इसका अभिप्राय है – जागरित स्थान और वैश्वानर। **'अ'** पहली मात्रा है– **'आप्तेः, आदिमत्वात् वा। आप्नोति ह वै सर्वान् कामान्'** अर्थात् इस अक्षर की सबसे पहले उपस्थिति होती है। यह सबसे मुख्य है 'अ' का उपासक समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है। अब ओ३म् की दूसरी मात्रा 'उ' पर विचार करते है। यह स्वप्न और तेजस् प्रधान है। 'उत्कर्षाद्, उभयत्वाद् वा' यह उपासक की ज्ञान धारा को उन्नति की ओर ले जाता है। तीसरी मात्रा 'म्' सुषुप्ति और प्राज्ञ की वाचक कही जा सकती है। **'मितेः, अपीतेः वा। मिनोति ह वै इदं सर्वम्'**। 'म्' का उपासक परमात्मा में विश्राम पाता है, वह ईश्वर के आनन्द को जान लेता है।

विषय कुछ गम्भीर हो गया है। थोड़ा सरल ढंग से विचार करते हैं। जब हम मुँह से 'अ' का उच्चारण करते हैं तो होंठ थोड़े से खुलते हैं, अतः 'अ' का अभिप्राय हुआ कि ईश्वर ही समस्त सृष्टि की उत्पत्ति करता है। जब हम 'उ' का उच्चारण करते हैं तो होंठ पूरी तरह खुल जाते हैं तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि ईश्वर सृष्टि का पालन करता है। इस प्रक्रिया को 'स्थिति' कहा जा सकता है। जब मुख से 'म्' का उच्चारण किया जाता है तो दोनों होंठ झटके से बन्द हो जाते हैं। यह प्रलय का सूचक है। इस प्रकार 'ओम्' शब्द उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का परिचायक कहा जा सकता है।

आइये, अब फिर मूल विषय पर विचार करते हैं। अकार के कारण अन्य अक्षरों का अस्तित्व है। हम लोगों को अक्षरों को समूह में देखने की आदत पड़ गई है। अतः 'अ' शीर्षक को देखकर आप लोगों को कुछ अटपटा–सा लग रहा होगा। लेकिन यह अक्षर चैलैंज देकर कहता है कि मेरे साथ रहना है तो रहो, नहीं तो मैं अकेला ही काफी हूँ। मैं तुम्हारा पिता हूँ और तुम मेरी संतान हो। मुझे तुम्हारी क्या चिन्ता, जबकि योगिराज श्री कृष्ण ने भी मेरी महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है – **'अक्षराणां अकारोऽस्मि'** अर्थात् मैं अक्षरों में 'अ' हूँ।

दूसरी तरफ तैत्तिरीय आख्यक ने भी 'अ' की पीठ थपथपा दी और यहाँ तक कह दिया कि **'अकारो वै सर्वा वाक्'** अर्थात् अकार में ही सम्पूर्ण वाक् (सम्पूर्ण अक्षर) विद्यमान हैं। 'अ' अक्षर के बिना तो शब्द रचना भी संभव नहीं है। गायत्री मंत्र का प्रारम्भ 'भूर्भुवः स्वः' से होता है। ये तीनों व्याहृनियाँ हैं। इनमें 'भूः' अ का, 'भुवः' उ का तथा 'स्वः' 'म्' का बोधक है। हाँ, एक बात और याद आई। तीन शाश्वत तत्त्व हैं– ईश्वर, जीव और प्रकृति। यहाँ भी 'अ' ने बाजी मार ली। 'अ' ईश्वर का वाचक है, 'उ' जीव का सूचक है तो 'म्' प्रकृति का द्योतक है। 'उ' जीव यदि 'म्' प्रकृति की ओर उन्मुख होता है तो सांसारिक प्रपंच में फँस जाता है परन्तु यदि वह 'अ' ईश्वर की ओर अग्रसर हो जाता है तो मुक्ति के द्वार तक पहुँच जाता है। देखा, आपने कैसे साधारण सा अकार अक्षर साक्षात् ईश्वर का प्रतिनिधि बन बैठा।

230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम,
ज्वालापुर (हरिद्वार)
मो. 9639149995

☞ पृष्ठ 08 का शेष

नैतिक मूल्यों की शिक्षा ...

परिवर्तन संभव नहीं है जबरन प्रयास करने पर वह टूट जाएगा। इसीलिए डी.ए.वी. में प्राथमिक कक्षाओं से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है, अतः संस्कार रूपी बीज को फलने–फूलने के लिए सही माहौल तथा शिक्षा रूपी दिशा प्रदान करने का कार्य हमारी संस्था ने सदा ही किया है।

बच्चों, यह लघु कहानी समाज की स्थिति को पूर्णतया चित्रित करती है – एक कमरे में चार मोमबत्तियाँ जल रही थीं और वह अकेले में आपस में बातें करती हैं। पहली मोमबत्ती बोली, मैं शांति हूँ पर मुझे लगता है अब इस दुनिया में मेरी जरूरत नहीं है। हर तरफ आपाधापी और लूटमार मची हुई है। मैं यहाँ अब और नहीं रह सकती और ऐसा कहते हुए कुछ देर में वह मोमबत्ती बुझ गई। दूसरी मोमबत्ती बोली, " मैं विश्वास हूँ, और मुझे लगता है झूठ और फ़रेब के बीच मेरी भी यहाँ कोई ज़रूरत नहीं है, मैं भी यहाँ से जा रही हूँ...", और दूसरी मोमबत्ती भी बुझ गई। तीसरी मोमबत्ती भी दुखी होते हुए बोली, " मैं प्रेम हूँ, मेरे पास जलते रहने की ताकत है पर आज हर कोई इतना व्यस्त है कि मेरे लिए किसी के पास वक्त ही नहीं, दूसरों से तो दूर लोग अपनों से भी प्रेम करना भूलते जा रहे हैं, मैं ये सब और नहीं सह सकती, मैं भी दुनिया से जा रही हूँ..." और ऐसा कहते हुए तीसरी मोमबत्ती बुझ गई। वह अभी बुझी ही थी कि एक मासूम बच्चा उस कमरे में दाखिल हुआ। मोमबत्ती को बुझे देख वह घबरा गया, उसकी आँखों में आँसू टपकने लगे और वह रूँआसा होते हुए बोला," अरे जल क्यों नहीं रहीं, तुम्हें तो अंत तक जलना है। तुम इस तरह बीच में हमें कैसे छोड़ कर जा सकती हो? तभी चौथी मोमबत्ती बोली "प्यारे बच्चे घबराओ नहीं, मैं आशा हूँ और जब तक मैं जल रही हूँ, हम बाकी मोमबत्तियों को फिर से जला सकते हैं।" यह सुन बच्चे की आँखें चमक उठीं और उसने आशा के बल पर शांति, विश्वास और प्रेम को फिर से प्रकाशित कर दिया।

साथियों, हमें यही आशा अपने प्रत्येक छात्र में जगानी है, उसे संस्कारों से अभिभूत करना है। इसी कारण हमारी संस्था ने यज्ञ की परंपरा को सदा से ही अपनाया है। विद्यालय में समय– समय पर यज्ञ तथा बच्चों को यज्ञ के महत्त्व से अवगत करवाया जाता है। प्रार्थनोपासना मंत्र के उच्चारण से विद्यालय परिसर का कोना–कोना, वैदिक परंपराओं से खिल उठता है।

अध्यात्म में ओ३म् का विशेष महत्त्व है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने शोध के माध्यम से ओ३म् के चमत्कारी प्रभाव की पुष्टि की है। ओ३म् के उच्चारण से फेफड़ों तथा हृदय में स्वस्थता आती है। शरीर, मन और मस्तिष्क तनाव रहित हो जाता है। इससे पाचन शक्ति तेज़ होती है तथा इसका उच्चारण खून के प्रवाह को संतुलित रखता है। कुछ भयंकर (एड्स) रोगों को दूर करने में भी यह सहायक होता है।

गायत्री मंत्र की महत्ता को हिंदुस्तान में ही नहीं विदेशों में भी स्वीकारा गया है, देखा गया है कि अमेरिका तथा इंडोनेशिया जैसे राष्ट्र अपने विद्यालय में बच्चों को इसका उच्चारण करवाते हैं।

छात्रों को धैर्य, विवेक, सत्य, सहनशीलता, सद्विचार, संवेदनशीलता आदि मूल्यों की निरंतर शिक्षा देकर उनमें मूल्यों का संचार किया जाता है। समय–समय पर 'वैदिक चेतना शिविर' का आयोजन भी वैदिक परंपरा का ही मूल मंत्र है, जो बालमन को कटी हुई पतंग की भाँति अनैतिकता की ओर बढ़ते हुए वातावरण में हिचकोले नहीं खाने देती, बल्कि उनको नैतिक मूल्य रूपी खूँटे से बाँधे रखती है। जिसका स्वाद कड़वा होता है परन्तु फल मीठा होता है। मैं यहाँ उपस्थित सभी छात्रों को यही संदेश देना चाहूँगी – मन में आस, कर्म में प्रयास, ईश्वर पर विश्वास रखकर आप जीवन के संघर्ष को पार करके सफलता प्राप्त कर सकते हो।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
सैक्टर–14 गुरुग्राम

पत्र/कविता

आर्यवत देश की दशा व दिशा सुधारने के लिए इच्छा शक्ति की सख्त ज़रूरत है।

आज हमारे समाज, देश व हिन्द राष्ट्र की स्वतंत्रता के 70 वर्ष बाद जो आन्तरिक व बाहरी गंभीर दशा व दिशा है। उससे आज देश की संस्कृति, सभ्यता के छिन्न–भिन्न होने के साथ देश की स्वतंत्रता, एकता, अखंडता व प्रभुसत्ता को खतरा हो गया है।

आज भारतीय समाज, की दशा व दिशा सुधारने के लिए भारतीय लोकतंत्र के भविष्य को उज्ज्वल व सुरक्षित रखने के लिए सभी राजनैतिक दलों के नेताओं व सभी सामाजिक व धार्मिक संगठनों के लोगों की प्रबल इच्छाशक्ति जागृत कर ठोस कदम उठाने की सख्त जरूरत है। यह वक्त की माँग है।

विदेशी मानसिकता को त्याग करने व स्वदेश आर्यवत बनाने की ईच्छा शक्ति पैदा करें।

देशबन्धु संतोष पार्क,
उत्तम नगर नई दिल्ली–59

****

पावन पर्व-मकर संक्रान्ति

आर्यों का यह मकर संक्रान्ति पावन पर्व है।
पर्वों का यह तो मूल है, हम सबको इस पर गर्व है।।
राम, कृष्ण, ऋषिवृन्द ने, इस पर्व को माना सुनों।
पाला सनातन धर्म को, था सत्य को जाना सुनों।।
इस दिन घरों में यज्ञ पावन, आर्यजन करते थे सब।
वैदिक कथा से मानसिक, पीड़ा सकल हरते थे सब।।
ज्ञान की गंगा विमल, बहती थी, प्रजा थी सुखी।
था स्वर्ग का वातावरण, कोई नहीं था तब दु:खी।।
शासक थे सब धर्मात्मा, प्रजा का रखते ध्यान थे।
वीर, व्रतधारी, सदाचारी, महा बलवान थे।।
विश्व हित की योजना, इस दिन बनाते थे सुनों।
न्यायकारी थे प्रजा का, दुख मिटाते थे सुनों।।
हम गुरु थे विश्व के, इसका सुखद परिनाम था।
भारतीय सब देवता थे, हर तरफ आराम था।।
चोर, डाकू, दुष्ट मघप, इस जगत में थे नहीं।
व्यभिचारिणी नारियाँ, तब विश्व में ना थीं कहीं।।
खान–पान था सात्विक, थे आर्यजन धर्मात्मा।
कर देते थे एक पल में, पापियों का खात्मा।।
यदि अर्थ इस त्यौहार का, संसार सारा जान ले।
गौतम, कपिल, दयानन्द की, यदि सीख दुनियाँ मान ले।।
सद्भावना जागे दिलों में, विश्व के कल्याण की।
सब भक्त ईश्वर के बनें, बातें तजें अभिमान की।।
वेद के अनकूल जीवन, यह हमारा हो प्रभु।
सब के जीवन का सहारा, तू ही प्यारा हो प्रभु।।
विश्वास है हमको जगत के, दूर होंगे दु:ख सभी।
दींन – दुखिया ना रहेंगे, प्राप्त होंगे सुख सभी।।
उग्रवादी, दुष्ट पापी, फिर सभी मिट जाएंगे।
परोपकारी आर्यजन, फिर वेदगाथा गाएंगे।।
आर्यो! सुन लो सभी तुम, वेद प्रचारक बनो।
बन जाओ त्यागी तपस्वी, सत्य के पालक बनो।।
है ईश! तुम वरदान दो, हम कर्म नेकी के करें।
मानव सभी मानव बनें, संसार की पीड़ा हरें।।

पं. नन्दलाल निर्धय सिद्धान्ताचार्य भजनोपदेशक
ग्राम पो. बहीन जनपद पलवल (हरियाणा)
मो. 9813845774

ऐसा करने से कुछ अन्तर दिखाई देगा

आर्य समाज 8/186 टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर का एक दरवाजा और एक खिडकी हर समय खुली रहती है। यद्यपि जहाँ साप्ताहिक कार्यक्रम होते हैं वहाँ कमरों को 7 दिन में 2–3 घंटों के लिए खोला जाता है। जहाँ दैनिक कार्यक्रम होते हैं वहाँ कमरे 24 घंटे में एक या दो घंटों के लिए खोले जाते है।

सनातन धर्मियों के मन्दिरों में मूर्तियाँ होती हैं जो सुरक्षा हेतु ताले में बन्द रहती हैं। आर्य समाज के कमरे/हॉल में एक खिड़की या रोशनदान अवश्य ऐसा होना चाहिए जिसकी खिड़कियाँ हर समय खुली रहें। ऐसा करने से मूर्ति पूजकों के मन्दिरों तथा आर्य समाज के कमरों में कुछ अंतर दिखाई देगा। कई नगरों में आर्य समाज मन्दिर लिखा जाता है। यह गलत है। नाम केवल **आर्य समाज** ही होना चाहिए जो दयानंद ने रखा था।

आर्यसमाज में आर्य साहित्य बिक्री के लिए उपलब्ध हो। आर्य अखबारों के ग्राहक बनाए जाते हैं समय–समय पर लेख लिखकर मुर्दा समाज को चेताया जाता है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद प्रत्येक मानव के लिए है। इसके अनुकूल अपना जीवन चलाना चाहिए।

इन्द्र देव गुलाटी (म्यांमार वाले)
18/186 टीचर्स कॉलोनी, बुलंदशहर
(उ0प्र0) 203001
मो. 8958778443

****

वेदों में ही ईश्वर का कथन है

संसार की प्राचीनत्तम पुस्तक ऋग्वेद का उद्घोष है– **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'**। वेदों में ही ईश्वर का कथन है– **'अहम् भूमिमाददामार्याय'**। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन के मोह को **'अनार्यजुष्टम्'** कहा है। बौद्ध धर्म के सिद्धान्त को 'चार आर्य सत्य' के नाम से जाना जाता है। रामायण एवं महाभारत में सर्वत्र ही आर्य शब्द का ही प्रयोग हुआ है। हमारे पढ़े जाने वाले संकल्प मंत्र में भी **'जम्बूद्वीपे आर्यावर्त्ते भरतखण्डे'** कहा गया है। यहाँ तक कि लोक भाषा में भी आर्य शब्द का अपभ्रंश 'आरज' शब्द का प्रयोग हुआ है। मुगलकाल (अकबर काल) में रचित तुलसीदास की 'रामचरित मानस' में आर्य का अपभ्रंश 'आरज' शब्द आया है– **'आरत' बस सम्मुख भजऊ बिलग न मानहुँ तात। आरसुत पदकमल बिना बादि जाहँ लगी नात'**। एक सिक्ख ग्रंथ 'पंच प्रकाश' में आर्य का अपभ्रंश 'आरज' शब्द प्रयुक्त हुआ है–**'जो तुम सिख हमारे आरज । देहुँ शीख धरम के कारज।।'** दिल्ली के प्रसिद्ध बिड़ला मंदिर में लगाए गए अधिकांश शिलापटो पर **'आर्य'** शब्द ही लिखा हुआ है। जानकारी के अनुसार काशी के विश्वनाथ मंदिर में मुख्य द्वार पर **'आर्यधर्मेतराणाम् प्रवेशो निषेध:'** लिखा हुआ है। इस तरह हमारे सभी प्राचीन–नवीन धर्मग्रंथ एवं इतिहास में आर्य शब्द का ही प्रयोग हुआ है, हिन्दू शब्द का नहीं।

लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि अपने संस्थापक का मान रखने के लिए हिन्दू समाज की एक प्रमुख संस्था आर्य शब्द को स्वीकार न करके हिन्दू शब्द के प्रयोग की जिद्द पर अड़ी हुई है। इसी संस्था के एक अनुषंगी संस्था ने राही मसूम रज़ा द्वारा महाभारत धारावाहिक का डायलॉग लिखे जाने पर जब आपत्ति प्रकट की, तो लेखक ने उनसे प्रश्न किया कि जब आपको इस्लामी भाषा के शब्द 'हिन्दू' पर आपत्ति नहीं है तो फिर हर सम्भव संस्कृत भाषा के प्रयोग करने पर भी आपत्ति क्यों? उस पर उनकी बोलती बन्द हो गई। उनसे कोई उत्तर देते नहीं बना। आखिर कब तक हम इस विदेशी भाषा से चिपककर अपमान सहते रहेंगे, जिसका हमारे ग्रंथों में उल्लेख तक नहीं है। यदि हमें दुनिया में अपमान से बचना है और गर्व से मस्तक ऊँचा कर जीना है, तो निश्चित रूप से हमें निम्न दोहे को अपने व्यवहार में चरितार्थ करना होगा–

'ओ३म है ईश हमारा, वेद हमारा धर्म।
आर्य है नाम प्यारा, यज्ञ हमारा कर्म।।
इसके अतिरिक्त और उपाय नहीं है–
'नान्य: पंथा विद्यते अयनाय'

–सूर्य देव चौधरी
झारखंड आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची

****

डी.ए.वी. पटेल नगर दिल्ली में मनाया गया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में उन्हें श्रद्धांजलि देने हेतु डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पश्चिमी पटेल नगर दिल्ली में प्रधानाचार्या श्रीमती रश्मि गुप्ता की अध्यक्षता में पाठशाला के प्रांगण में यज्ञ का आयोजन किया गया। बच्चों ने गायत्री मंत्र ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना मंत्र तथा यज्ञ मंत्रों का उच्चारण सस्वर किया तथा यज्ञ की आरती बड़ी श्रद्धा से गाई।

यज्ञ में बच्चों को श्रद्धानन्द जी के कार्यो के बारे में अवगत करवाया गया। हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी स्वामी जी की ही देन है, जो अब विश्वविद्यालय बन चुका है। स्वामी जी हिन्दी भाषा के भक्त थे। उन्होंने विज्ञान सहित समस्त विषयों की पुस्तकें हिन्दी भाषा में प्रकाशित कराईं। पीड़ितों की सहायता के लिए सेवा समिति की स्थापना की। इनका समस्त जीवन धर्म, राष्ट्र, राष्ट्रभाषा तथा जनता की सेवा में समर्पित था। वह धर्म पर बलिदान हो गये। हम सब उन्हें शत–शत नमन करते है।

गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली का 85 वां वार्षिकोत्सव एवं 39 वां चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली का 85वाँ वार्षिकोत्सव एवं 39वाँ चतुर्वेद पारायण यज्ञ सोत्साह सम्पन्न हुआ। वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान डॉ. महावीर अग्रवाल थे। चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति, सहित अनेक विद्वानों के प्रवचन हुए एवं उनका सम्मान भी किया गया।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि यज्ञ करने से हमारा परिवार, देश व समाज उन्नति को प्राप्त होगा। गुरुकुलों को दान देने की प्रेरणा की और कहा कि इससे आपको पुण्य प्राप्त होगा। स्वामी प्रणवानन्द जी ने देश भर में 9 गुरुकुल संचालित कर रहे हैं। यह उनके पूर्वजन्मों का संस्कार है।

डा. महेश विद्यालंकार जी ने कहा कि जिस स्थान पर अच्छे विद्वानों का आना–जाना हो तथा जहां जाने पर अच्छे वैदिक विद्वान मिलते हों वह स्थान तीर्थ बन जाता है। गुरुकुलों की रक्षा करना हम सब आर्यो का पुनीत कर्तव्य है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने 16 आहुतियों के देवयज्ञ को महायज्ञ कहा है। पर्यावरण की रक्षा व वायुमण्डल की शुद्धि का एकमात्र समाधान व निदान अग्निहोत्र यज्ञ ही है।

उत्सव में डॉ. रघुवीर वेदालंकार, ठाकुर विक्रम सिंह, श्री वीरपाल, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, डॉ. आनन्द कुमार एवं डॉ. अशोक चौहान, एमिटी यूनिवर्सिटी आदि के उद्बोधन भी हुए।

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज ने प्रतिस्पर्धाओं में पाया प्रथम स्थान

गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में महर्षि दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् द्वारा प्रतिस्पर्धा हुई। प्रतिस्पर्धा के विषय अष्टाध्यायी, धातुपाठ, शास्त्रार्थ विचार, त्रिभाषी कोष एवं वैदिक सिद्धान्त थे। इस प्रतिस्पर्धा में 25 गुरुकुलों के 120 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

अष्टाध्यायी प्रतिस्पर्धा में 35 प्रतिभागी थे, जिसमें आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज की 3 ब्रह्मचारिणियों ने 5–5 हजार रु. के पुरस्कार प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। धातुपाठ में 30 प्रतिभागी थे। जिसमें शिवगंज गुरुकुल की 2 ब्रह्मचारिणियों ने 4–4 हजार रु. के पुरस्कार प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियाँ सर्वोच्च स्थान व पुरस्कार प्राप्त करती आ रही हैं।

आर्य कन्या गुरुकुल की उपलब्धि से नगर शिवगंज राजस्थान एवं आर्यजगत् व गुरुकुलों का मान तो बढ़ा ही है, साथ ही कन्या वर्ग का उज्ज्वल भविष्य निखर कर सामने आया है। ब्रह्मचारिणियों की इस सतत प्रगति का सम्पूर्ण श्रेय गुरुकुल की प्राचार्या पू. आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी को जाता है। जो अपने दिन रात, अहोरात्र के अथक परिश्रम से ब्रह्मचारिणियों को विकास की ज्योति दिखा रही हैं और निरन्तर विकास के लिए प्रयासरत हैं।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 09/10-01-2019

डी.ए.वी. पालमपुर में सम्पन हुआ 'वैदिक चेतना शिविर'

आर्य प्रदेशिक प्रतिनिधि उपसभा हिमाचल प्रदेश की प्रधाना श्रीमती जे. काकरिया के दिशा निर्देशानुसार बच्चों में वेदों के प्रति रूचि जागृत करने, वैदिक ज्ञान व योग को प्रचारित करने, पाखंडो का खण्डन तथा यज्ञ का प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से डी. ए.वी. पब्लिक स्कूल पालमपुर में दो दिवसीय वैदिक चेतना शिविर समारोह सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 9 डी. ए.वी. विद्यालयों के कक्षा आठवीं के छात्रों तथा अध्यापकों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि सहायक क्षेत्रीय अधिकारी श्री वी.के. यादव ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया।

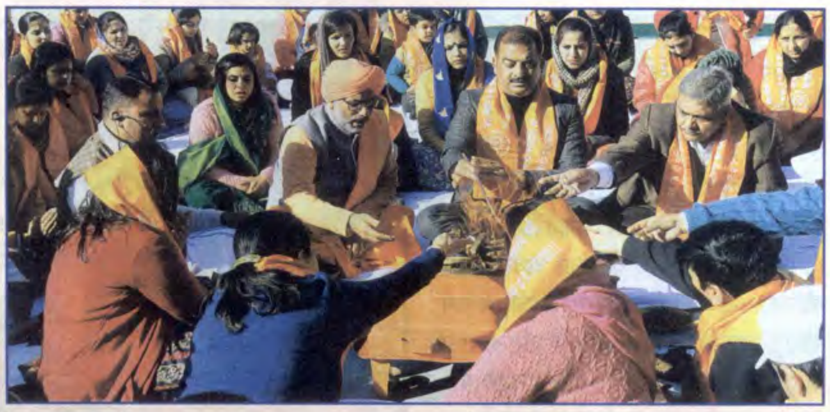

शिवरार्थी प्रातः 5 बजे उठकर जागरण वेला के मन्त्रों का उच्चारण करते थे। बच्चो के उतम स्वास्थ्य हेतु श्री राकेश कुमार योगाचार्य द्वारा विद्यार्थियों को योगासन, प्राणायाम आदि नित्य कराये जाते थे। बच्चों ने सभी गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। उपस्थित जन यज्ञ में श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ डालते और मंत्रोच्चारण व भजनों से वातावरण को भक्तिमय बनाते थे।

मुख्य वक्ता आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) ने अपने प्रवचनों में कहा कि बच्चों को बचपन में दिए गए संस्कार राष्ट्र का भविष्य तय करते हैं। अतः शिक्षकों को अपने श्रेष्ठ आचरण से बच्चों को शिक्षित करना चाहिए।

श्री कुलदीप विद्यार्थी भजनोपदेशक जो बिजनौर (उत्तर प्रदेश) एवं वयोवृद्ध भजनोपदेशक महाशय कल्याण सिंह आर्य ने अपने उद्बोधन में बच्चों को चारित्रिक शिक्षा और माता–पिता तथा गुरुजनों का सम्मान करने की प्रेरणा दी।

वेद व्यास डी.ए.वी. विकासपुरी में मनाया गया स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

वेद व्यास डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल विकासपुरी दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा–पूर्वक मनाया गया, जिसमें विद्यालय के सभी अध्यापक अध्यापिकाओं एवं बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर बच्चों के द्वारा गीत एवं कविता–पाठ द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी को याद किया गया। विद्यालय की नवीन प्राचार्या श्रीमती शालिनी अरोड़ा ने इस अवसर पर सभी बच्चों को सम्बोधित करते हुए श्रद्धानन्द जी के जीवन एवं बलिदान से बच्चों को परिचित कराया। उन्होंने दयानन्द जी एवं श्रद्धानन्द जी की चर्चा करते हुए बच्चों को गुरु–शिष्य परम्परा एवं उनसे शिक्षा ग्रहण करने का संदेश दिया। शांतिपाठ के द्वारा कार्यक्रम की समाप्ति की गई।

वेद व्यास डी.ए.वी. विकासपुरी की प्राचार्या श्रीमती शालिनी अरोड़ा द्वारा स्कूल की बैवसाइट पर जनवरी 2019 से "स्वस्ति पन्थामनु चरेम" वैदिक संदेश का प्रसारण किया जायेगा। जिसमें प्रतिमास विषयानुकूल पर्व, महान पुरुषों एवं देश भक्तों के जीवन, एवं वेदमन्तों के माध्यम् से जीवनोपयोगी संदेश छात्रों एवं अभिभावकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। इससे हम दयानन्द एवं आर्यसमाज के मन्तव्यों को घर–घर में पंहुचाने का प्रयास विद्यालय की ओर से करेंगे।

एल.आर.एस. डी.ए.वी. अबोहर का ओवर ऑल ट्राफी पर कब्जा

सोशल वैलफेयर सोसायटी ट्रस्ट द्वारा अबोहर के सेवा सदन में आयोजित किए गए छठे महात्मा नारायण दास ग्रोवर मेमोरियल कल्चरल प्रतियोगिता में एल.आर.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर के मेधावी व प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में अपनी प्रतिभा का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए व विभिन्न स्थान प्राप्त करते हुए ओवरऑल ट्राफी पर कब्जा जमाया है।

प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा व पाठ्य सहायक गतिविधियों की प्रभारी श्रीमती आदर्श जैन ने बताया कि विद्यालय के मेधावी व प्रतिभाशाली छात्रों द्वारा इस प्रतियोगिता में विगत छः वर्षों से भाग लिया जा रहा है और अपनी प्रतिभा के बल पर हर वर्ष ओवरऑल ट्रॉफी पर विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा कब्जा जमाया जा रहा है। विद्यार्थी मास्टर अर्जुन ठठई व मास्टर शुभम सैनी ने क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान, कुमारी अदिति व कुमारी अभ्या खुंगर ने ऑन द स्पॉट निबंध राइटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान, कुमारी गीताशु ने पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान, कोलाज मेकिंग प्रतियोगिता में मास्टर अर्शदीप ने द्वितीय व कुमारी अर्शिया ने तृतीय स्थान, भाषण प्रतियोगिता में मास्टर शौर्य नारंग ने सांत्वना पुरस्कार व कविता प्रतियोगिता में मास्टर हर्ष गुप्ता ने सांत्वना पुरस्कार, लोकगीत गायन प्रतियोगिता में कुमारी सुखप्रीत कौर ने तृतीय स्थान, अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता में कुमारी रितिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। प्रस्तुत की गई स्किट में मास्टर पुश्किन को बैस्ट एक्टर और लोक नृत्य भंगड़ा में मास्टर कपिल को बैस्ट डांसर के खिताब से नवाजा गया।

प्रात कालीन प्रार्थना सभा में सभी विजेता प्रतियोगियों को श्रीमती शर्मा द्वारा सम्मानित किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**